हिन्दी आवृत्ति

चैतन्य लहरी

खण्ड - XII नवम्बर-दिसम्बर-2000 अंक

"बिना ध्यान-धारणा के आपका उत्थान नहीं हो सकता। आपको ध्यान-धारणा तो करनी ही होगी...तभी शुद्धिकरण होगा।...शनैः शनैः...आप बहुत गहन हो जाएंगे और आपकी शक्तियाँ प्रकट होने लगेंगी। जहाँ भी आप होंगे नकारात्मकता वहाँ से भाग जाएगी और सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

गुरु पूजा कबेला, 23.7.2000

ये ज्ञान, जो आपने प्राप्त किया है वह
प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

मेरा चित्त हमेशा आप पर होता है। सदैव आप लोगों को प्रभावित करता हुआ। मैं आपके विषय में सभी कुछ इसलिए जान लेती हूं कि मेरा चित्त सर्वव्यापी है। आपके साथ कोई भी घटना यदि होती है, कोई भी परेशानी जब आपको होती है, कोई भी परिवर्तन जब आप में होता है तो मेरा चित्त वहां पर होता है।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी
नवरात्रि पूजा कबैला (27.9.98)

इस अंक में

1.	गुरु स्तुति	5
2.	गुरु पूजा 23.7.2000	9
3.	ईस्टर पूजा-23.4.2000	20
4.	आदिशक्ति पूजा	32

सम्पादक : योगी महाजन

प्रकाशक : विजय नालगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली-110 067

मुद्रक : अभिनव प्रिन्ट्स, दिल्ली-34
फोन : 7184340

गुरु स्तुति

परम पूज्य श्री माताजी के श्री चरणों में अर्पित

ज्ञानेश्वरी के अध्याय 12 से 18 पर आधारित

1. हे , गुरु माँ (गुरु मौली) आपको कोटि-कोटि प्रणाम। अपने बच्चों पर निर्मल एवं शाश्वत आनन्द-निरानन्द की उदारतापूर्वक वर्षा करने के लिए आप सर्वत्र विख्यात हैं।

2. हे, गुरु माँ, हे करुणामयी, वासनारूपी सर्प अपने शिकंजे में कसकर जब हमें डसता है तो उसका ज़हर हमारी चेतना का हरण कर लेता है। वासना रूपी इस सर्प के ज़हर को उतारना भी बहुत कठिन कार्य है। परन्तु हे प्रेममयी माँ, आपके एक कटाक्ष मात्र से यह ज़हर लुप्त हो जाता है तथा चेतना पुनर्जागृत हो उठती है।

3. हे, परमप्रिय गुरु, श्री माताजी, अत्यन्त कृपा कर आपने अमृत का सागर हमें प्रदान किया है। सांसारिक जीवन की तपन किस प्रकार हमें कष्ट दे सकती है और किस प्रकार इसके दुख हम पर विजयी हो सकते हैं?

4. हे परम प्रिय गुरु, केवल आपकी कृपा के कारण ही आपके बच्चे योग के आशीष का शाश्वत् आनन्द उठा रहे हैं। आप ही अत्यन्त प्रेमपूर्वक हम पर 'सोहं' (मैं वही हूँ) की आशीष वर्षा कर रही है।

5. हे माँ, अपने हृदय के झूले में, अपनी गोद में, अपनी पोषक शक्ति द्वारा आप प्रेमपूर्वक अपने बच्चों का लालन पालन करती हैं और उन्हें योगनिद्रा में सुलाती हैं।

6. श्री माताजी, आप हमें आरती का वरदान देती हैं, आत्मा जिसकी लपट है, और खेलने के लिए मन:शक्ति तथा प्राणशक्ति रूपी दो खिलौने प्रदान करती हैं। तथा, हे माँ, आध्यात्मिक आशीष के गहनों से हमारा श्रृंगार करती हैं।

7. हे गुरु मौली (गुरु माँ), अपने अमृत का भोजन आप हमें प्रदान करती हैं और 'सोहं' 'हंसा' के अनहद नाद की लोरी गाकर हमारी आत्मा को ज्योतिर्मय करके हमें योगनिद्रा में सुलाती हैं।

8. हे श्रीमाताजी, हे गुरुमूर्ति, आप ही सभी साधकों की माँ हैं। सारी विद्या का उद्भव आपके चरण कमलों से होता है। कृपा करके वर दें कि हम आपके चरण कमलों की छाया में सदा-सर्वदा बने रहें।

9. श्रीमाताजी अपनी करुणा का आश्रय जब आप हमें प्रदान करती हैं तो हम दिव्य ज्ञान (शुद्ध विद्या) में पारंगत हो जाते हैं।

10. हे गुरु, श्री माताजी, आपको कोटि-कोटि प्रणाम। आपके चरण कमलों की छत्रछाया में ही शुद्ध विद्या पनपती है। श्रीमाता जी नि:सन्देह आपके चरण कमल ही हमारी आत्मा है।

11. श्रीमाता जी आपको कोटि-कोटि प्रणाम। आपका स्मरण मात्र हमें शब्दों के अथाह सागर पर आधिपत्य प्रदान करता है अर्थात् अपनी

सूक्ष्म भावनाओं को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने की शक्ति प्राप्त हो जाती है और हमारी जिह्वा से दिव्य ज्ञान (शुद्ध विद्या) बहने लगती है।

12. श्रीमाताजी जो आपको कोटि कोटि प्रणाम। आपके स्मरण मात्र से व्यक्ति की वाणी इतनी मधुर हो जाती है कि माधुर्य, अमृत तथा सभी रस विनम्र होकर शब्दों के माध्यम से तुरन्त अभिव्यक्त हो जाते हैं।

13. श्रीमाताजी आपको कोटि कोटि प्रणाम। आपकी अनुकम्पा से आपके बच्चों को ऐसे शब्द सूझते हैं जो आत्मा से उदित होने वाले गहन अनुभव तथा सूक्ष्म रहस्यों को अभिव्यक्त करते हैं।

14. श्रीमाताजी हमारे हृदय जब आपके चरण कमलों में होते हैं तो सौभाग्यश्री, दिव्य ज्ञान तथा साक्षात्कार की कृपा हम पर होती है। श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

15. श्रीमाताजी आप सर्वदेवों में महान् हैं। दिव्य ज्ञान का प्रकाश (प्रज्ञा) प्रदान करने वाले सूर्य आप ही हैं। आप ही की कृपा से आपके बच्चे (साधक) निरानन्द रूपी जीवन आनन्द प्राप्त कर सके। श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

16. श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम। आप ही वह वट वृक्ष हैं जिसकी छाया में आपके बच्चे सुख और सुरक्षा का अनुभव करते हैं। अपने बच्चों के हृदय में आप ही 'सोहं' का सूक्ष्म रहस्य प्रकट करती हैं। आप ही वह सागर हैं जिसमें तीनों लोक प्रकट तथा लुप्त होते हैं।

17. श्रीमाताजी कष्ट में फँसे अपने बच्चों की रक्षा करने में आप देर नहीं करतीं। आप करुणा का अनन्त सागर हैं। सारा दिव्य ज्ञान आपका अभिन्न मित्र है। श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

18. श्रीमाताजी आपकी माया की लीला में जब हम लिप्त होते हैं तो हमें लगता है यह संसार सत्य है। परन्तु जब आप अपना ब्रह्म रूप प्रकट करती है अर्थात् सर्वशक्तिमान परमात्मा का सच्च रूप, तो हमें इस बात का ज्ञान होता है कि श्रीमाताजी आप ही सर्वव्याप्त हैं। श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

19. श्रीमाताजी जादूगर जब दर्शकों पर अपने जादू का सम्मोहन डालता है तो दर्शक पूरे विश्व को भूल जाते हैं। परन्तु जादूगर स्वयं को छुपा नहीं सकता। परन्तु श्रीमाताजी आपकी माया का जादू आपके विषय में सत्य की चेतना को लुप्त कर देता है और व्यक्ति भ्रान्तिमय संसार को सत्य मान लेता है। श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

20. श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम। केवल आप ही संसार के ज़र्रे-ज़र्रे में व्याप्त हैं। सहजयोगियों तथा आत्मसाक्षात्कारी लोगों में आप अपने ब्रह्म रूप में प्रकट होती हैं। ब्रह्म रूप में प्रकट होकर उन्हें अन्तरप्रकाश प्रदान करती हैं। परन्तु माया में लिप्त लोग आपके विषय में नहीं जान पाते। श्रीमाताजी आपसे सम्बन्धित आपकी यह लीला अत्यन्त अद्भुत है।

21. श्रीमाताजी आप ही की शक्ति जल को तरलता तथा पृथ्वी माँ को क्षमा का गुण प्रदान करती है। श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

22. श्रीमाताजी त्रिलोकी में आप ही की शक्ति

सूर्य तथा चन्द्र की तरह चमकती है। बिना आपकी शक्ति के वे मोती को जन्म देने वाली सीप के खोल सम होते। श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

23. श्रीमाताजी आप ही की शक्ति के कारण पवन स्वतन्त्रता पूर्वक कहीं भी बहती है तथा सर्वव्याप्त प्रतीत होने वाला गगन आपके ब्रह्माण्डीय अस्तित्व का मात्र नन्हा सा भाग है जिसे वैसे ही खोजना पड़ता है जैसे लुका छिपी खेल में छिपे हुए व्यक्ति को। श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

24. श्रीमाताजी केवल इतना ही नहीं है। माया भी आपके विराट रूप का एक नन्हा सा अंश है और अन्तरप्रकाश का उद्‌भव भी आप ही की शक्ति के कारण है। श्रुतियों (वेदों) ने आपके रूप का वर्णन करने का निरर्थक प्रयास किया परन्तु आपके रूप को समझ न पाई। श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

25. श्रीमाताजी परमात्मा के स्वरूप का वर्णन करने में वेदों को दक्ष माना जाता था। परन्तु ये दक्षता तभी तक सीमित थी जब तक उन्होंने आपके 'ब्रह्म रूप' का अवलोकन नहीं किया। आपके पावन स्वरूप का वर्णन आरम्भ करते ही वेद बिल्कुल वैसे ही शान्त हो जाते हैं जिस प्रकार हम आपके ध्यान की स्थिति में होते हैं। श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

26. श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम। हम आपके सभी बच्चों ने अपने हृदय शुद्ध कर लिए हैं। कृपा करके अपने चरण कमल हमारे हृदय में विराजित करें। अपने हृदय में, श्रीमाताजी, हम आपके चरण कमलों की पूजा करना चाहते हैं।

27. श्रीमाताजी तदातम्य भाव हमारी युग हस्तांजलि सम है जिससे हम कलियाँ निकालकर आपके चरण कमलों में अर्पण करते हैं। हमारी नाड़ियाँ, चक्र तथा इन्द्रियाँ ही ये कलियाँ हैं। इन्हें हम आपके चरण कमलों में समर्पित करते हैं आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

28. श्रीमाताजी अनन्य भाव से (पूर्ण समर्पण भाव से) हम आपके चरण कमल धोते हैं और उन पर अपनी अनामिका (Ring Finger) से समर्पण का चन्दन लगाते हैं। श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

29. श्रीमाताजी आपके प्रति हमारा प्रेम स्वर्ण की तरह से है। कृपा करें कि हम इस स्वर्ण को पवित्र करके इसकी पाजेबें बनाकर इन्हें आपके चरणों में पहना सकें।

30. श्रीमाताजी कृपा करें कि अपने प्रेम के शुद्ध स्वर्ण से अंगूठियाँ बनवाकर हम आपकी पादांगुलियों में पहनाएं।

31. श्रीमाताजी, आनन्द-सुगन्ध से परिपूर्ण सत्व गुण रूपी पुष्प हम आपके चरण कमलों में अर्पित करते हैं। श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

32. श्रीमाताजी, अपने अहं की अगरबत्ती जलाकर हम न अहम् की भावना की ज्योति से आपके चरण कमलों की आरती उतारते हैं। श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

33. श्रीमाताजी हमारा शरीर और प्राण पादुकाओं का जोड़ा है। कृपा करके इसे अपने चरण कमलों में धारण कीजिए। श्रीमाताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

34. श्रीमाताजी कृपा करें कि आपके चरण कमलों में ये पूजा जो आपके बच्चे कर रहे हैं सभी कमियों के बावजूद भी पूर्ण हो और आप इसे स्वीकार करें।

35. श्रीमाताजी अपनी पूजा का ये अवसर आपने हमें प्रदान किया, इसके लिए हम आपके सभी बच्चे अखण्ड आभारी हैं। हमारे जीवन से दुख समाप्त हो गए हैं, पाप क्या होता है ये हम भूल गए हैं और दारिद्रय का अस्तित्व समाप्त हो गया है। आपके पावन दर्शन करके जीवन की पूर्णता का आनन्द हमें प्राप्त हो गया है। श्री माताजी आपको कोटि-कोटि प्रणाम।

गुरु पूजा

कबेला - 23.7.2000

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम यहाँ गुरुतत्व को समझने के लिए आए हैं। गुरु क्या करता है? आपके अन्दर जो भी कुछ है, आपके अन्तर्निहित बहुमूल्य गुण, आपके ज्ञान के लिए वह इन्हें खोजता है। वास्तव में सारा ज्ञान, सारी आध्यात्मिकता, सारा आनन्द आपके अन्तर्निहित है। यह सब आपके अन्दर विद्यमान है। गुरु तो केवल आपको आपके ज्ञान और आपकी आत्मा के प्रति चेतन करते हैं। सभी के अन्दर आत्मा है और सभी के अन्दर आध्यात्मिकता भी है। ऐसा कुछ भी नहीं है जो आपको बाहर से मिलता हो। परन्तु ये ज्ञान प्राप्त करने से पूर्व आप इससे कटे हुए होते हैं या अन्धकार में होते हैं और उस अज्ञानता में आप नहीं जानते कि आपके अन्दर कौन सी सम्पदा निहित है। अत: **गुरु का कार्य यह है कि वह आपको इस बात का ज्ञान करवाए कि आप क्या हैं।** ये पहला कदम है कि वह आपके अन्दर वह जागृति आरम्भ करता है जिसके द्वारा आप जान जाते हैं कि बाह्य विश्व मात्र एक भ्रम है तथा आप अपने अन्तस में ज्योतित होने लगते हैं। कुछ लोग तत्क्षण पूर्ण प्रकाश प्राप्त कर लेते हैं और कुछ इसे शनै: शनै: प्राप्त करते हैं।

सभी धर्मों का सार यही है कि आप स्वयं को पहचानो। जो लोग धर्म के नाम पर लड़-झगड़ रहे हैं उनसे आपने पूछा है कि क्या आपके धर्म ने आपको अपनी पहचान करवा दी है? सब धर्मों ने यदि एक ही बात कही है तो आपके सभी धर्मों का केवल लक्ष्य, स्वयं को जानना है परन्तु लोग कर्मकाण्डों में फँस जाते हैं। वे सोचते हैं कि ये कर्मकाण्ड करके वे परमात्मा के बहुत समीप हैं। अपने विषय में वे पूर्ण अन्धकार में रहते हैं और दिन रात कुछ न कुछ ऐसा करते रहते हैं जिसका आत्मा से कोई मतलब नहीं। अज्ञानता के कारण भिन्न प्रकार के व्यायाम, प्रार्थनाएँ, पूजाएँ आदि करते रहते हैं। ऐसे लोगों को लोग पैसे देते रहते हैं, वे लोग धनवान हो जाते हैं। इनकी दिलचस्पी केवल धन में होती है। आपका सारा धन लूटकर वे आपको मूर्ख बनाते हैं। वे आपके अहंकार को भी बढ़ावा देते हैं और इसके कारण आप भ्रम के समुद्र की ओर बहने लगते हैं और अन्तत: स्वयं को बहुत ही धार्मिक तथा परमात्मा से जुड़े हुए मानते हुए आप इसी भ्रम सागर में डूब जाते हैं। जबकि वास्तव में आप परमात्मा से जुड़े ही न थे! परमात्मा को जानने के लिए पहले आपको स्वयं को जानना चाहिए। स्वयं को जाने बिना परमात्मा को नहीं जाना जा सकता। स्वयं का ज्ञान प्राप्त करना बहुत आवश्यक है। परन्तु जब आपको स्वयं का ज्ञान प्राप्त होता है तो वह भी अधूरा होता है। आपका अनुभव अधूरा होता है। यह ज्ञान आवश्यक है और केवल गुरु ही आपको आत्मा का ज्ञान देता है। अब आपने इसे जाँचना

है और परखना है कि आपके गुरु ने जो कुछ बताया वह सत्य है या नहीं। गुरु को बताई हुई बातें ठीक हैं भी सही या नहीं। कहीं ये बातें भी एक अन्य प्रकार का भ्रम जाल तो नहीं है?

उत्थान मार्ग पर लोग बहुत सी समस्याओं में फँस जाते हैं। जिनमें से सर्वोपरि अहं की समस्या है विशेष रूप से पश्चिम में। अहं बढ़ जाता है और आप सोचने लगते हैं कि आप बहुत महान हैं और अन्य लोगों से अच्छे हैं और आप में कुछ बहुत ही विशेष हैं। यह अज्ञानता सांसारिक अज्ञानता से कहीं अधिक भयानक है क्योंकि सांसारिक अज्ञानता में आप गलत कार्य के परिणाम भी महसूस करते हैं। उत्थान मार्ग पर जाते हुए जब आप आधे रास्ते पर होते हैं, जब आपकी अज्ञानता अपने विषय में होती है तब व्यक्ति को समझना चाहिए कि उसमें अहं न हो। इस स्थिति में आत्मनिरीक्षण आरम्भ होता है आप स्वयं को देखने लगते हैं कि आपमें क्या त्रुटि है जब आप समझ जाते हैं कि आपमें अहं है, जब आपको पता चलता है कि आपमें कोई कमी है या दोष है तभी आप आत्मनिरीक्षण करने लगते हैं। यह प्रयत्न अत्यन्त ईमानदारी से किया जाना चाहिए। **सहजयोग में बहुत ही आरम्भिक स्थिति में लोग सोचने लगते हैं कि वे बहुत महान हैं उन्हें आत्मदर्शन की आवश्यकता नहीं है। ऐसे लोग आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त किए बिना ही पुनः अज्ञानता के बादलों में फँस जाते हैं। अतः आपको आत्मदर्शन करना होगा और स्वयं देखना होगा कि आप क्या करते रहे हैं, आप क्या हैं? आप कहाँ तक उन्नत हुए हैं।** ऐसे व्यक्ति की शैली शनैः शनैः परिवर्तित होती है कैसे? सर्वप्रथम अत्यन्त उग्र स्वभाव, क्रोधी तथा अहंकार से पूर्ण व्यक्ति अत्यन्त भद्र एवं विनम्र होने लगता है। दूसरी तरह के भयग्रस्त और अत्यन्त सावधान रहने वाले व्यक्ति निर्भय हो जाते हैं उस स्थिति में व्यक्ति को भय बिल्कुल नहीं रहता। वह विश्वस्त होता है कि वह ठीक मार्ग पर है और ठीक रास्ते पर चल रहा है। आसानी से ऐसा व्यक्ति उत्तेजित नहीं होता। फिर भी आपको और अधिक ऊँचाई तक उन्नत होना है, उस स्तर तक जहाँ ध्यान-धारणा करते हुए आप जान सकें कि आपमें क्या दोष है।

आपने अपना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लिया है, आत्मसाक्षात्कार का आशीर्वाद आपको प्राप्त हो गया है, आपका स्वास्थ्य अच्छा हो गया है, आपको सभी प्रकार के इतने सारे आशीर्वाद प्राप्त हो गए हैं कि आप गणना भी नहीं कर सकते। सभी कुछ है परन्तु अभी आपको और आगे जाना है अर्थात् सहजयोग के पूर्णज्ञान को समझना है। अपनी बौद्धिक योग्यता से सर्वप्रथम आपने इसे समझना है और तत्पश्चात् जाँचना है कि यह कहाँ तक सत्य है, किस स्तर तक आपने इसे समझा है, कहाँ तक इसे आपने कार्यान्वित किया है और कहाँ तक इसे जाना है? **अन्तर्दर्शन द्वारा जब आप स्वयं को देखने लगते हैं तो भक्ति के साम्राज्य में प्रवेश करने लगते हैं तब न तो आप बहुत अधिक बोलते हैं और न किसी को परेशान करने का प्रयत्न करते हैं। अत्यन्त मधुर, भद्र और विवेकशील व्यक्ति आप बन जाते हैं।** ऐसे व्यक्ति को स्वयं परखना चाहिए कि वह अन्य

लोगों से किस प्रकार व्यवहार कर रहा है। अब चित्त एक व्यक्ति से दूसरे पर जाने लगता है और आप देखने लगते हैं कि आप किस प्रकार आचरण कर रहे हैं, किस प्रकार आप प्रेम कर रहे हैं, आपकी सुहृदयता के क्या गुण हैं? किसी व्यक्ति से जब आप निर्वाज्य प्रेम करते हैं तब उसके प्रति पूर्णत: समर्पित होते हैं पूर्णत:। उसकी आज्ञा आप मानते हैं और यदि यह प्रेम विद्यमान है जिसे आप समर्पण भी कहते हैं, तो आप उसके लिए कुछ भी कर सकते हैं। यह मात्र प्रेम है।

समर्पण प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी नहीं और वह प्रेम अत्यन्त आनन्ददायी है। यह भक्ति, यह समर्पण आरम्भ हो जाता है और भक्ति आपका शुद्धीकरण कर देती है। आपके सभी दुर्गुण, जिन्हें मैं कमियाँ कहती हूँ तथा अपने अन्दर की समस्याओं को आप समझते हैं और इन पर काबू पाते हैं। किसी को यदि इन दुर्गुणों, समस्याओं से परिपूर्ण आप पाते हैं तो निर्वाज्य प्रेम के कारण आप उस व्यक्ति को सहन करने का प्रयत्न करते हैं। ऐसा व्यक्ति सब कुछ सहन करता है। उसमें किसी भी प्रकार की आक्रामकता नहीं होती। ऐसे लोग केवल क्षमा करते हैं। आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति बढ़ते ही चले जाते हैं। उनकी क्षमा करने की शक्ति अथाह होती है। उनके मन में किसी के भी प्रति दुर्भावना नहीं होती। किसी के भी प्रति क्रोध नहीं होता वे सहन करते चले जाते हैं। और क्षमा करते जाते हैं। क्षमा का यह गुण संगीत सम है-आपकी भक्ति का संगीत। क्षमा का यह धन इन गुरुओं ने ईसा-मसीह के जीवन से प्राप्त किया होगा। सभी सन्तों को सताया गया और परेशान किया गया। अधिकतर सन्तों को सताया गया परन्तु इन लोगों ने कभी इनका विरोध नहीं किया, कभी बदला नहीं लिया और कोई क्रूर कार्य नहीं किया। परेशान करने वाले लोगों के लिए इनके मन में केवल करुणा भाव थे। हे परमात्मा कृपा करके इन्हें क्षमा कर दें, ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं। ये लोग इतने करुणामय थे, करुणा ही इनका स्वभाव बन गई थी। करुणा जब स्वभाव बन जाती है तो ऐसे लोग पूर्णत: शान्त हो जाते हैं। वे कभी उत्तेजित नहीं होते, किसी भी घटना से वे उत्तेजित नहीं होते। सोचते है कि यही परमात्मा की मर्जी है। उन्हें कुछ भी उत्तेजित नहीं कर सकता, कुछ भी अशान्त नहीं कर सकता। वे अपनी भक्ति का आनन्द लेते हैं, गुरु तथा परमात्मा के प्रति अपनी भक्ति का।

भक्ति के इसी आलम में वे चाहे कविता लिखें, चाहे नृत्य करें, चाहे भजन गाएं, क्योंकि शान्ति उनके अन्त:स्थित है और वे आनन्दमग्न हैं। अकेलेपन में भी वे कभी अकेले नहीं होते। अपना ही आनन्द लेते हैं। वे जानते हैं कि वे परमात्मा के साथ एक रूप हैं तथा परमात्मा के आशीर्वादों का वे आनन्द लेते हैं। कृत्रिमता वे कभी नहीं अपनाते, कभी चिन्तित नहीं होते, कभी उत्तेजित नहीं होते। न वे भविष्यवादी होते हैं न वे भूतकाल की बातें सोचते हैं, सदैव वर्तमान में रहते हैं। वर्तमान में रहते हुए वे पूर्णत: शान्त होते हैं। **कोई भी समस्या या दुर्घटना यदि हो तो वे तुरन्त निर्विचार समाधि में चले जाते हैं। उनके अन्दर इस स्थिति में चले जाने की योग्यता होती है।**

गुरु बनने के लिए आपको ऐसा व्यक्तित्व विकसित करना होगा कि आप किसी भी बन्धन में न फँसे। मैं आपको अपना उदाहरण दूँगी। मैं कभी जल्दबाजी नहीं करती। न ही कभी मैं समय की चिन्ता करती हूँ। एक बार मैं अमेरिका जा रही थी। आपको यदि इस बात पर विश्वास है कि परमात्मा ने आपके लिए सारी योजना बना रखी है तो आप निश्चिंत हो जाते हैं। परमात्मा आपकी देखभाल कर रहे हैं तो चिन्ता क्यों करनी है? मुझे अमेरिका जाना था परन्तु एक बच्चा गिर गया। जाने के लिए मैं उठने ही वाली थी कि बच्चा गिरा और उसकी बाजू टूट गई। जब मैंने बच्चे को देखा तो कहा ठीक है पहले मैं बच्चे को ठीक करूँगी। सब लोग कहने लगे कि आप अमेरिका जा रही हैं। मैंने कहा मैं निश्चित रूप से जाऊंगी। मैंने बच्चे को ठीक किया और इस कार्य में लगभग आधा घण्टा लगा। बाहर आकर मैंने कहा कि अब वायुपत्तन पर चलें। कहने लगे, श्रीमाताजी आपने बहुत देर कर दी है। मैंने कहा,"मुझे कभी देर नहीं होती, चलो, चलें।" हम वायुपत्तन पहुँचे और पाया कि जिस वायुयान से मुझे जाना था वह ख़राब था, उसके स्थान पर एक अन्य यान आया था जो न्यूयार्क के स्थान पर वाशिंगटन जा रहा था। वास्तव में मैं भी वाशिंगटन ही जाना चाहती थी। अब आप कल्पना कीजिए कि किस प्रकार चीजें घटित होती हैं। इसे हम सहज कहते हैं यह सहज कार्यान्वयन है। अर्थात् यह सब प्रयत्नविहीन है, स्वतः घटित होता है। परन्तु सर्वप्रथम आपका व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए, आपकी भक्ति इतनी दृढ़ होनी चाहिए कि परमात्मा आपकी देखभाल करने के लिए विवश हो जाएं, पूर्णतः विवश।

आपको समझना चाहिए कि परमेश्वरी शक्ति आपके आस-पास है और यह आपकी सुरक्षा तथा आपकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति का पूर्ण आश्वासन है। आप कह सकते हैं कि श्री माताजी आप बहुत शक्तिशाली हैं। परन्तु यदि आप परमेश्वरी कार्य के प्रति पूर्णतः समर्पित हो जाएं तो आप भी अत्यन्त शक्तिशाली बन सकते हैं। आपको शक्तियाँ भी प्राप्त हो जाएंगी और परमेश्वरी कार्य भी। शक्तियों के साथ साथ परमात्मा आपको आवश्यक कार्य भी देंगे तथा उसे करने के लिए आवश्यक समय भी प्रदान करेंगे। सभी कुछ परमात्मा आपको प्रदान करेंगे। अन्य लोगों से बहकर करुणा जब परमात्मा की ओर दिव्य व्यक्ति की ओर या आपके गुरु की ओर आने लगती है तो जीवन बहुत ही सहज हो जाता है, बहुत ही सहज। सभी जटिलताएँ समाप्त हो जाती हैं और आपको किसी भी चीज़ की चिन्ता नहीं रहती। आँखें बन्द करिए और आपके सभी कार्य हो जाते हैं। कार्य इस प्रकार होते हैं मानो आपको यही इच्छा रही हो। न तो आपको इसकी इच्छा करनी पड़ती है, न इसके विषय में सोचना पड़ता है। सभी कुछ स्वतः कार्यान्वित होता है। परमात्मा सभी कार्यों को देखते हैं आपकी सुख-सुविधा, आपके स्वास्थ्य और सभी चीज़ों को। यह परमेश्वरी सहायता आपको खोजनी नहीं पड़ती, माँगनी नहीं पड़ती, आप तो ऐसे व्यक्तित्व होते हैं जिसके लिए परमात्मा जिम्मेदार है।

आप परमात्मा की विशेष जिम्मेदारी बन जाते हैं और वे जानते हैं कि आपके लिए क्या अच्छा है और क्या नहीं।

मैं एक उदाहरण देती हूँ, ऐसे बहुत से उदाहरण मैं दे सकती हूँ, मान लो मैंने सोचा कि कोई व्यक्ति मुझसे मिलने आ रहा है और सहजयोगियों ने कहा कि श्रीमाताजी वो तो बहुत बुरा है, तो वह आएगा ही नहीं, मेरे पास पहुँचेगा ही नहीं। सभी अच्छी घटनाएँ घटेंगी और यदि कोई बुरी घटना घटित होती है तो आप अपनी करुणा का उपयोग करें। **कुछ बुरा घटित होने की स्थिति में आप अपनी करुणा का उपयोग करके समस्या का समाधान करें। आप अपनी समस्याओं, अपने आस-पास की समस्याओं तथा अपने समुदाय की समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।**

तो अब आपको आत्मसाक्षात्कार मिल चुका है! मैं नहीं जानती कि इसमें आप कितनी गहनता तक पहुँचेंगे? मेरे पास बहुत सी महिलाओं के बारे में शिकायत है, न ही वे ध्यान धारणा करती हैं और न अपनी देखभाल करती हैं। वे आत्मसाक्षात्कारी नहीं है, यही कारण है कि उनके पति उन्हें तलाक देना चाहते हैं। वे सोचते हैं कि ये औरतें बेकार हैं। कुछ पुरुष भी ऐसे ही हैं। इस समस्या का समाधान करने के लिए आपमें करुणा का होना आवश्यक है। और किसी भी तरह से अपनी करुणा द्वारा अपने जीवन साथी को ठीक मार्ग पर लाना आवश्यक है। आख़िरकार पुरुष महिलाओं की अपेक्षा बहुत व्यस्त होते हैं, परन्तु महिलाओं के पास भी अन्य बहुत से कार्य होते हैं। उन्हें अपने परिवार की अपने बच्चों की देखभाल करनी होती है और उनका मस्तिष्क ऐसी सभी सांसारिक चीजों में फँसा होता है और उनके पास ध्यान-धारणा के लिए समय ही नहीं होता। **बिना ध्यान-धारणा के आपका उत्थान नहीं हो सकता। आपको ध्यान-धारणा तो करनी ही होगी। लोग सोचते हैं हमें आत्मसाक्षात्कार तो मिल ही गया है। सभी कुछ ठीक है। नहीं। आपको प्रतिदिन ध्यान-धारणा तो करनी ही होगी। तभी शुद्धीकरण होता है।** आन्तरिक शुद्धी के पश्चात् आप समझ पाते हैं क्या चीज आवश्यक है और क्या अनावश्यक है तथा ये भी कि आपके चक्र साफ हो गए हैं। परमात्मा ही इस कार्य को करते हैं, परन्तु आपको नियमपूर्वक ध्यान-धारणा करनी आवश्यक हैं। शनैः शनैः आपको लगेगा कि आपकी ध्यान-धारणा बहुत गहन हो गई है। **आप बहुत गहन हो जाएंगे और आपकी शक्तियाँ प्रकट होने लगेंगी। जहाँ भी आप होंगे नकारात्मकता वहाँ से भाग जाएगी और सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान हो जाएगा।** जो भी कुछ आपको चाहिए होगा वह मिल जाएगा। दूसरों की सहायता करने की इच्छा दूसरों को कुछ देने की इच्छा पूर्ण हो जाएगी। ये मेरा अपना अनुभव है जो मैं आपको बता रही हूँ। सांयकाल कम से कम दस मिनट और प्रातः काल कम से कम पाँच मिनट पूर्ण श्रद्धा तथा लगन से ध्यान करें। मैंने यहाँ उपस्थित कुछ लोगों में गहन भक्ति और श्रद्धा देखी है। **श्रद्धा भक्ति से कहीं ऊँची है। यह आपके अस्तित्व का अंग-प्रत्यंग बन जाती है और पूर्णतः आपके रोम-रोम में समा जाती है। ये श्रद्धा**

जब आपको प्राप्त हो जाएगी तो ये बहुत चमत्कारिक है। ये बहुत से चमत्कार करती है। ये बात सत्य है कि मेरे सोचने मात्र से बहुत से लोग रोग-मुक्त हो गए। ये वास्तविकता है परन्तु इसका अर्थ ये नहीं है कि उन लोगों में उस उच्च स्तर की श्रद्धा थी। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि उनमें वह श्रद्धा स्वयं में विकसित करनी चाहिए।

श्रद्धा आत्मा का नैसर्गिक प्रकाश है इसे अपने अन्दर विकसित कैसे किया जाए? अपने अन्दर विकसित करने की लोग जी तोड़ कोशिश कर रहे हैं। परन्तु **श्रद्धा मानसिक गतिविधियों से नहीं विकसित की जा सकती। आत्मा के ध्यान-धारणा के अतिरिक्त किसी भी अन्य विधि से श्रद्धा विकसित नहीं हो सकती।** मैं सदा आपसे ध्यान-धारणा के लिए कहती हूँ। **कौन व्यक्ति ध्यान-धारणा करता है और कौन नहीं करता इसका मुझे तुरन्त पता चल जाता है। लोग मेरी पूजा करेंगे, सहजयोग के बारे में बातचीत करेंगे। लोकप्रियता के लिए बाहर जाकर सहज प्रचार करेंगे, परन्तु अपने अन्तस में उन्होंने अभी तक स्वयं को नहीं खोजा।** तो विकास की इस अवस्था में आपको पूर्ण उत्साह के साथ ये समझ लेना चाहिए कि ध्यान-धारणा तथा अन्तर्दर्शन के साथ आप यह स्थिति सुगमता से प्राप्त कर सकते हैं। अन्तर्दर्शन द्वारा सूझ-बूझ का नया गुण आपमें विकसित हो जाएगा और आप समस्याओं का समाधान कर सकेंगे। किसी भी आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति के अन्दर यह गुण होता है। वह आपकी सभी समस्याओं का समाधान खोज सकता है। वह सुझा सकता है किस प्रकार आपकी सहायता हो सकती है। श्रद्धा से एक प्रकार के भाईचारे का भी उद्भव होता है। **चाहे आप सहजयोग पर भाषण देते हों और सभी प्रकार के कार्य करते हो, जब तक आपमें श्रद्धा नहीं है आपका उत्थान नहीं हो सकता।** मैं कहना चाहूंगी कि **यह श्रद्धा एक प्रकार का प्रेम है जो मन्द-मन्द अग्नि की तरह से फैलता है। ऐसी अग्नि की तरह से जो जलाती नहीं है, गर्मी नहीं देती, सुन्दर शीतल लहरियों का अनुभव आपके अन्तस में भर देती है और इस अनुभव को आप समझ भी जाते हैं।** कभी किसी सहजयोगी की निन्दा न करें, कभी नहीं। कुछ सीमा तक मैं किसी ऐसे व्यक्ति की बात नहीं सुनती जो किसी सहजयोगी की शिकायत करता है। परन्तु यदि यह शिकायत सामूहिक हो तो मुझे थोड़ी सी चिन्ता होती है और इसके विषय में मैं सम्बन्धित अगुआ से पूछती हूँ। कोई व्यक्ति आकर यदि मुझसे शिकायतें करें तो प्राय: मैं उससे कहती हूँ कि आप स्वयं अन्तर्दर्शन करो वास्तविकता यह नहीं है। दूसरों के दोष ढूंढना मानव की एक आम कमजोरी है। मानव अपने दोषों को नहीं देखता। अन्य लोगों के दोष खोजने का क्या लाभ है। अन्य लोगों में दोष खोजने से आपको कोई लाभ न होगा अपने दोष ढूँढने का प्रयत्न करें जिन्हें आप ठीक भी कर सकते हैं जिससे आपको लाभ भी हो सकता है और जिसे आप कार्यान्वित भी कर सकते हैं। ये आपकी जिम्मेदारी है। **स्वयं को जानना आपके लिए आवश्यक है। अत: अच्छा होगा कि आप अपने दोष खोजें और उन्हें ठीक करें।**

परन्तु कुछ लोग दूसरों के दोष खोजने की अपनी आदत पर गर्व करते हैं। बात-बात में वे कहते है कि मुझे ये पसन्द है मुझे वो पसन्द है। आत्मा के विषय में आपके क्या विचार हैं? आपको ये पसन्द है आपको वो पसन्द है परन्तु आत्मा के विषय में आपके क्या विचार हैं? क्या आपको वो पसन्द है? क्या आपको आत्मा का आनन्द आता है? लोग कहे चले जाएंगे मुझे ये पसन्द नहीं है, मुझे वो पसन्द नहीं है। ये कहना पश्चिमी देशों की आम बात है।

अब आप देखिए कुछ महिलाओं ने सुन्दर कालीन बनाए हैं। ये इतने मोटे हैं कि मैं जब इन पर चलती हूँ तो कभी-कभी डोल जाती है परन्तु जिस प्रेम के साथ ये बनाए गए हैं वह मुझे इतना आनन्द से भर देता है, इतनी खुशी प्रदान करता है कि आप कल्पना नहीं कर सकते कि मैं उनके विषय में क्या महसूस करती हूँ! **यह आनन्द, आनन्द का ये सागर आपके अन्दर निहित है और जब यह उमड़ने लगता है तो आपको कष्ट नहीं देता।** यह आपको इतने सुन्दर आनन्द से भर देता है कि इसका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। आपके अस्तित्व पर यह एक फुहार की तरह से है। यह कृपा वर्षा है। अन्य लोगों द्वारा दिया गया प्रेम आपको रोमांचित कर देता है। यह प्रेम आप किसी से मांगते नहीं परन्तु जब भी किसी ऐसे व्यक्ति को देखते हैं जो अत्यन्त प्रेममय, अत्यन्त सुहृदय है तो ऐसे सम्बन्ध में सच्ची मित्रता होती है। परन्तु सहजयोगियों की बुराई करना अत्यन्त गलत है और फिर लोगों से बताते फिरना कि उसमें ये कमी है, उसने ऐसा किया है तथा उसकी सहायता करने के स्थान पर उसके विरूद्ध इस प्रकार सामूहिक भावना बनाना तो अत्यन्त गलत है। **कोई भी सहजयोगी जब कठिनाई में होता है तो आपको चाहिए सामूहिक रूप से उसकी सहायता करें। चाहे उसमें कुछ कमियाँ ही क्यों न हों उसकी निन्दा न करें। अगर आप ये कहते हैं उसमें ये कमी है, उसमें वो कमी है और उस व्यक्ति की निन्दा करने लगते हैं तो आप सहजयोगी नहीं हैं। आप तभी तक सहजयोगी हैं जब तक अर्न्तदर्शन के माध्यम से आप अपने दोष देख सकते हैं।**

अब आपमें से अधिकतर लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो चुका है। इसका अनुभव आपको है। परन्तु आपमें से कुछ लोगों को इसका ज्ञान नहीं है। आपको चाहिए कि वह ज्ञान प्राप्त करें और परखें, ये ज्ञान वास्तव में है या नहीं। जैसे अमेरिका में निह (NIH) नामक स्वास्थ्य संस्थान में उन्होंने सहजयोगियों पर परीक्षण करने चाहे, ये लोग डॉक्टर थे और उनमें से एक ने आगे बढ़कर कहा,"ठीक है अपनी चैतन्य लहरियों द्वारा मुझे बताइए कि मुझमें क्या कमी है।" तो वहाँ गई सहजयोगिनियों ने बताया कि श्रीमन आपके हृदय में कुछ खराबी है। उसने कहा,"यह बात ठीक है, क्योंकि एक महीना पूर्व ही वह हृदय की बाह्यपथ शल्य चिकित्सा (Bypass Surgery) करवा चुका था। अस्पताल से वह ठीक ठाक बाहर आया था। वे लोग हैरान हो गए क्योंकि रोग निदान करने में ही रोगी अधमरा हो जाता है! तो चैतन्य लहरियाँ अनुभव करके व्यक्ति के रोग का पता लगाना अत्यन्त ही सुगम

तरीका है। उन्होंने हमारी ओर बहुत ध्यान दिया है। अस्पताल में वह सहजयोग विकसित करना चाहते हैं।

अत: आपको चाहिए स्वयं को जाँचें, परखें और देखें कि आप क्या हैं। मान लो एक पति-पत्नी हैं पत्नी ध्यान-धारणा करती है, सभी कुछ जानती है, वो जानती है कि उसके पति में क्या दोष है परन्तु उसे बताती नहीं। वह सहन करती रहती है, उसकी शिकायत नहीं करती और न ही उसे कुछ कहती है। उसकी ये सहनशीलता पति को विश्वस्त करती है कि उसकी पत्नी का व्यक्तित्व उससे कहीं ऊँचा है। वो चाहे जो कुछ हो, समझ जाता है कि उसकी पत्नी ने यह महान व्यक्तित्व प्राप्त कर लिया है। पश्चिम के देशों में विशेष रूप से बहुत चारित्रिक खामियाँ हैं वास्तव में ऐसे लगता है जैसे उन्हें साँप ने ही काट लिया हो। पश्चिम के लोग जो कुकृत्य करते हैं उनके विषय में अविकसित देश के लोग तो सोच भी नहीं सकते। विकास ने उन्हें सभी प्रकार की स्वच्छंदता दी है तथा आवारागर्दी का स्वभाव दिया है। वो सोचते हैं कि वे स्वतन्त्र हैं और कहीं भी जाकर किसी भी प्रकार से मज़े ले सकते हैं। यह एक आम शैली है परन्तु आप अपने को जाँचे। क्या आप इन्हीं लोगों में से हैं या उन लोगों में से हैं जो उत्थान मार्ग में आपसे कहीं ऊँचे हैं? यह एक प्रक्रिया है। एक दम से आप उत्थान के उस बिन्दू तक नहीं पहुँच सकते। कभी-कभी तो नए सहजयोगी पुराने सहजयोगियों से बहुत अच्छे होते हैं क्योंकि उनमें बहुत दृढ़ इच्छा होती है। आपको समझना चाहिए कि हम क्या खोज रहे हैं। हम इसलिए खोज रहे हैं कि हम स्वयं को पहचानना चाहते हैं। किसी तरह से हम जान गए हैं कि हमें स्वयं को पहचानना है इसलिए हम खोज रहे हैं। इसके लिए हम सभी प्रकार के कार्य कर रहे हैं। मेरे अभिप्राय ये हैं कि इस खोज के नाम पर हम सभी प्रकार के गलत कार्य कर रहे हैं। परन्तु यही खोज आपको सहजयोग तक ले आती है तब आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना होता है जो कि कुण्डलिनी जागरण के माध्यम से सहज है। कुण्डलिनी अधिकतर कार्य कर देती है। किसी ने मुझे बताया कि कुण्डलिनी जागरण के बाद उसने रातोंरात शराब और धूम्रपान त्याग दिया। मैं ऐसा करने के लिए कभी नहीं कहती परन्तु रातोंरात उसने ये सब त्याग दिया और कहने लगी कि पहले मैं अपने बालों की शैली के विषय में बहुत तुनकमिज़ाज थी। बाल-सज्जा विशेषज्ञ के पास जाकर मैं बाल बनाती थी। सौन्दर्य प्रसाधक के पास मैं बहुत सा समय लगाती थी। कहने लगी मैंने ये सब भी त्याग दिया है। पहले मैं बेढंगे वस्त्र पहनती थी परन्तु अब मैं अपने शरीर का सम्मान करने लगी हूँ और गरिमामय वस्त्र पहनती हूँ। ये सारा ज्ञान आपको स्वत: ही आ जाता है ये आपके अन्तर्निहित है क्योंकि ये आपका अपना ज्ञान है। गुरु के बताने से भी आपका पथ-प्रदर्शन होता है। गुरु का कार्य आपका पथ-प्रदर्शन करना है।

तो इस स्थिति में क्या कमी है? **सहजयोग में जो कमी है वह मुझे आपको बतानी है।** विश्व में हमारे सम्मुख बहुत से सामूहिक विध्वंस हुए, बहुत प्रकार की विपदाएं, भूकम्प, बाढ़ तथा चक्रवात आए। परन्तु सहजयोगी सदैव सुरक्षित

रहे। निःसन्देह इन प्राकृतिक विपत्तियों से सहजयोगी सदैव सुरक्षित रहे। परन्तु यह सुरक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भी आपने क्या समझा? आपने क्या जाना? **क्यों ये विपदाएं आ रही हैं? क्योंकि सहजयोग सामूहिक नहीं है। सहजयोग को अत्यन्त सामूहिक होना है, इसे सर्वत्र फैलना है। सहजयोग को बहुत अधिक लोगों तक पहुँचना चाहिए।** परन्तु हम इसके लिए कुछ नहीं करते या कभी थोड़ा बहुत कर लेते हैं। आपको बाहर निकलना होगा। ईसामसीह के बारह शिष्यों की ओर देखो। उन्होंने बहुत सी गलतियाँ भी की फिर भी किस प्रकार उन्होंने ईसाई-धर्म को फैलाया और कितनी प्रबलता से इस कार्य को किया? **वह प्रबलता, वह गहनता यदि आपमें नहीं है और यदि आप सहजयोग प्रसार के लिए स्वयं को पूर्णतः समर्पित नहीं कर देते तो सामूहिक समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता।** आप तो केवल अपनी सांसारिक चीज़ों में, अपनी नौकरियों आदि में ही व्यस्त हैं। सहजयोग में ये भी मान्य है, कोई एतराज नहीं है। परन्तु आपको अपना चित्त जीवन के दूसरे पक्ष पर भी डालना चाहिए कि हम सामूहिकता के लिए क्या कर रहे हैं? क्या हम सहजयोग प्रचार कर रहे हैं? क्या हम लोगों को इसके विषय में अवगत करा रहे हैं? मैं हैरान थी कि एक बार वायुयान से यात्रा करते हुए एक महिला मेरी साथ वाली कुर्सी पर बैठी थी और उसकी चैतन्य लहरियाँ बहुत खराब थीं। मैंने स्वयं को बन्धन दिया और उससे पूछा कि वह अपने आध्यात्मिक उत्थान के लिए क्या करती है? उसने बहाई मत का नाम लिया। हे परमात्मा। मैंने कहा अगर ये लोग इसी प्रकार फैलते गए और इनकी संख्या इतनी बढ़ गई तो क्या होगा? विनाश! वे तो इतने नकारात्मक लोग हैं कि विश्व का हित तो करना उनके लिए असम्भव है। इसी प्रकार से आप देखें कि कुगुरुओं की तरफ लोग किस प्रकार खिंचे चले जाते हैं? किस प्रकार उनसे जुड़ जाते हैं और उनके सन्देश को फैलाते हैं? मैंने लोगों को सड़कों पर गाते हुए देखा है। अटपटे वस्त्र पहनकर अपने गुरु की स्तुति गाते हुए! हमें इस तरह की चीज़ों की कोई आवश्यकता नहीं है। आप लोगों को ज्ञान प्राप्त हो गया है और निःसन्देह आप आत्मसाक्षात्कारी हैं। परन्तु महत्वपूर्ण बात ये है कि आपने सहजयोग के लिए क्या किया? सहजयोग आपको सर्वत्र फैलाना होगा। उदाहरण के लिए आप मेरा एक बिल्ला (Badge) पहना करें तो लोग आपसे पूछेंगे कि ये क्या है? तब आप उन्हें सहजयोग के विषय में बताएं? आप सहजयोग के विषय में बातचीत करना शुरू कर दें, इसके अतिरिक्त कुछ न करें। केवल सहजयोग की बातचीत करें और सहजयोग को फैलाते जाएं। जब तक आप ये कार्य नहीं करते तब तक ये सामूहिक न होगा और सामूहिक गलतियों के कारण जो प्राकृतिक विनाश होने वाला है वो होकर रहेगा। आपकी सुरक्षा बहुत सी विपदाओं से की जाती है। प्रदूषण होते हुए भी सहजयोगियों पर इसका प्रभाव नहीं पड़ता। चाहे भूकम्प और विनाश हो, सहजयोगी की सुरक्षा होगी। तो क्यों न हम पूरे विश्व की रक्षा करें। विपत्ति के बाद विपत्ति आ रही है। यदि आपमें करुणा है तो उन सब लोगों के विषय में सोचें जो इन विपदाओं

के शिकार होने वाले हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मैं बहुत से लोगों को रोगमुक्त कर सकती हूँ। नि:सन्देह मैं नहीं जानती कि सहजयोग को सामूहिक किस प्रकार बनाएं।

अब आप बहुत बड़ी संख्या में हैं। **आप सब लोग आत्मसाक्षात्कार देना प्रारम्भ कर सकते हैं। आप लोगों को चाहिए कि कम से कम सौ लोगों को आत्मसाक्षात्कार दें।** जगह-जगह जाकर आत्मसाक्षात्कार के विषय में बातचीत करें। परमेश्वर (परमेश्वरी माँ) की स्तुति गाएं और आप पूरे विश्व को बचा लेंगे। **थोड़े से लोगों को बचा लेने से आप सतयुग नहीं ला सकते। इसके लिए पूरी पृथ्वी माँ को बचाना होगा। इस पर रहने वाले सभी लोगों को बचाना होगा, चाहे जैसे भी ये लोग हैं।** दूरदर्शन पर मैंने देखा है कि किस प्रकार निर्लज्जतापूर्वक ये लोग उन चीज़ों की बातें करते हैं जिनके विषय में इन्हें बिल्कुल ज्ञान नहीं है और हजारों लोग इनके पीछे-पीछे घूमते हैं! ये बात नहीं है कि लोग मूर्ख हैं या वे किसी गलत मार्ग पर चलना चाहते हैं, परन्तु ये कुगुरु उन्हें फँसाने की कला में सिद्धहस्त है। ये जानते हैं कि किस तरह से उन्हें अपने शिकंजे में लेना है, किस तरह से उनसे बातचीत करनी है। परन्तु **सहजयोगी यदि किसी खराब चैतन्य लहरियों वाले व्यक्ति को देखता है तो वह भाग खड़ा होता है! ऐसे व्यक्ति से बचने का प्रयत्न करता है। उनके पास जाकर ये नहीं कहता कि आपकी चैतन्य लहरियाँ खराब हैं! अत: आप लोगों को साहसिक होना होगा और उन स्थानों पर जाकर उनसे बातचीत करके उन्हें सामूहिक बनाना होगा, अन्यथा आप इस विश्व को परमात्मा के प्रकोप से नहीं बचा सकेंगे।** नि:सन्देह परमात्मा अत्यन्त क्रोधमय हैं। आप लोगों की तो वे रक्षा करेंगे परन्तु उसका क्या लाभ होगा? हमें तो पूरी पृथ्वी माँ को बचाना होगा और इस कार्य के लिए आपको तैयार रहना है। आपको यह सब कार्यान्वित करना होगा। जहाँ भी अवसर मिले सहजयोग का प्रचार करें। कुछ लोगों ने मुझे बताया कि श्रीमाताजी यदि आप आ जाएं तो अच्छा होगा, क्यों? ऐसा क्यों है? आप लोग भी तो मेरे जैसे बन सकते हैं। इसके विषय में लोगों को बता सकते हैं। मैंने केवल एक व्यक्ति से सहजयोग आरम्भ किया था और उस समय तो सर्वत्र पूर्ण अंधेरा था। कोई साधक न था केवल भयानक लोग थे, फिर भी यह कार्यान्वित हुआ। अत: हर व्यक्ति बहुत से सहजयोगी बना सकता है आप सब लोग भी ऐसा ही क्यों नहीं करते और इसके विषय में लोगों को क्यों नहीं बताते? आपका आचरण, आपकी शैली निश्चित रूप से लोगों को प्रभावित करेगी। आपको इस प्रकार इसे कार्यान्वित करना है कि सामूहिक चेतना प्राप्ति का अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकें। सहजयोग केवल सहजयोगियों के लिए ही नहीं है। ये सबके लिए है ताकि प्राकृतिक विपदाएं तथा भयानक घटनाएं जो घट रही हैं रुक जाएं, पूर्णत: रुक जाएं। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि इन्हें रोका जा सकता है। जिस प्रकार आपकी सदा रक्षा की गई है वैसे ही उन सभी लोगों की रक्षा की जाएगी जो आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त कर लेंगे। क्यों न खुलकर बातचीत की

जाए और लोगों को बताया जाए कि यदि हम इस प्रकार अपराध करते रहे, यदि हम इसी प्रकार चरित्रहीनता, धोखाधड़ी और शोषण करते रहे और स्वयं को यदि हमने विनाशशक्ति बनाए रखा तो इस दैवी प्रकोप से बचा नहीं जा सकेगा और, मैं सोचती हूँ कि हम इसके लिए जिम्मेदार होंगे। हर कार्य करने के लिए या किसी भी बुराई से बचने के लिए आपको संस्थाएं बनाने की आवश्यकता नहीं है। उन्हें विश्वास दिलाने और सहजयोग में लाने की आपकी शक्ति से ही सब कार्य हो जाएगा। मुझे आशा है कि गुरु के रूप में आप लोग समझेंगे कि आपने क्या करना है। गुरु के रूप में आपके सम्मुख बहुत सी चीजें हैं, उनमें आपका चरित्र भी है। कल इन्होंने मुझे बताया कि किस प्रकार लाओत्से ने गुरुओं के विषय में लिखा कि किस प्रकार वे सभी चीज़ों से ऊपर थे-अशांति, ईर्ष्या तथा व्यर्थ की बातचीत से ऊपर वे अत्यन्त महान हैं। वे गुरु हैं और गुरु रहेंगे और आप लोग यदि ऐसा ही करने का प्रयत्न करेंगे तो आप भी गुरु होंगे। आपने यही प्राप्त करना है। मैं जानती हूँ कि आप लोगों में से कुछ लोग यह स्थिति प्राप्त कर चुके हैं परन्तु अधिकतर ने अपनी करुणा एवं प्रेम से उस स्थिति को प्राप्त करना है।

परमात्मा आपको धन्य करे।

ईस्टर पूजा

इस्ताम्बूल टर्की 23.4.2000

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम ईसा मसीह के पुनर्जन्म की महान घटना का उत्सव मना रहे हैं। आपका पुनर्जन्म भी वैसे ही हुआ और आपने परमेश्वरी प्रेम से परिपूर्ण नवजीवन प्राप्त कर लिया। आप सब जानते थे कि कुछ उच्च घटना घटित होनी है तथा आपको पुनर्जन्म पाना है। परन्तु कोई भी ये बात न जानता था कि यह किस प्रकार होना है। आपके अस्तित्व के सूक्ष्म पक्ष के विषय में आपको कभी नहीं बताया गया। सन्तों ने केवल इतना बताया कि आपको किस प्रकार आचरण करना है। उन्होंने केवल इतना कहा कि अपने जीवन को किस प्रकार अत्यन्त पावन तथा सत्यनिष्ठ बना के रखें, परन्तु ये नहीं बताया कि ये कार्य किस प्रकार हो पाएगा। निःसन्देह भारत में लोग इसके विषय में जानते हैं परन्तु उनकी संख्या बहुत ही कम है। अब आप लोगों के माध्यम से यह ज्ञान विश्व भर को जा रहा है। जब आपकी अपनी माँ, आपकी व्यक्तिगत माँ, कुण्डलिनी, उठती हैं तो वे आपको पुनर्जन्म प्रदान करती हैं और इस प्रकार परम चैतन्य से आपका योग हो जाता है। ये सब बिना साक्षात्कार प्राप्त किए यदि बताया जाए तो यह अर्थविहीन है। परन्तु लोगों को इसके विषय में बड़े-बड़े विचार दिए गए तथा उन्हें बताया गया कि एक दिन आपका पुनर्जन्म होगा। आपके लिए यह महानतम घटना है, आपके जीवन की यह महानतम घटना है, और आपको चाहिए कि स्वयं को भाग्यशाली मानें कि आप यह उपलब्धि प्राप्त कर सके। अपने पूर्व जन्मों में इस स्वर्गीय स्थिति को प्राप्त करने की आपकी तीव्र इच्छा के कारण ही ऐसा हुआ। खोजने के लिए लोग दरी-कन्दराओं में जाया करते थे तथा सभी प्रकार के कार्य किया करते थे। आप लोग यह सब तपस्याएं कर चुके हैं। अब आपको कुछ नहीं त्यागना। कोई त्याग करने की जरूरत नहीं है। त्याग की धारणा गलत है। मैं कहूंगी कि यह असामयिक विचार है। यह समय तो आपके सहज-पुर्नजन्म, स्वतः उत्थान प्राप्त करने का है। इसके लिए आपको कुछ नहीं करना, यह इतना सहज है और इतनी अच्छी तरह से कार्यान्वित हो रहा है। वास्तव में मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई जब मैंने देखा कि मुसलमान लोग भी, जिनके विषय में मैं बहुत चिन्तित थी और सोचती थी कि इन्हें किस प्रकार बचाया जाए, आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त कर रहे हैं। यह लोग बुराइयों के जाल में फंसे हुए हैं। व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि कुरान मोहम्मद साहब की मृत्यु के 40 वर्षों के पश्चात् लिखी गई। तो हो सकता है कि शब्दों को इधर-उधर कर दिया गया हो और इनके अर्थ भी संदिग्ध हों। उसी समय सुन्ना (SUNNA)

नामक एक अन्य पुस्तक भी छपी और इसको छापने वाला व्यक्ति कोई सन्त न था, क्योंकि वह आत्मसाक्षात्कारी नहीं था। मैं नहीं समझ पाती कि धर्म के दृष्टिकोण से कविताओं को आप किस प्रकार समझ पाते हैं और पद्य में लिखी गई बातों को ठीक रूप से किस प्रकार व्याख्या करते हैं। मैं भी कवियित्री हूँ और कविता में सहजयोग की बातें लिख सकती थी। परन्तु मैंने कहा, नहीं, कविता को तोड़ा मरोड़ा जा सकता है और इस प्रकार लोग इसका दुरुपयोग कर सकते हैं। कविता में गूढ़ ज्ञान लिखने में यह समस्या है। भारत में भी यही समस्या थी। उदाहरण के रूप में कबीर ने बहुत सुन्दर गूढ़ ज्ञान की बातों को पद्य में लिखा। परन्तु जिस प्रकार लोगों ने इसकी व्याख्या की वह अत्यन्त निराशाजनक था और कबीर की वास्तविक कविताओं के अर्थ से बिल्कुल भिन्न। किसी भी चीज के अर्थों को लोग आवश्यकतानुसार किसी भी प्रकार तोड़ मरोड़ सकते हैं। मैंने सोचा कि परमात्मा के विषय में मैंने भी कविताएं लिखी तो इनका भी वही हश्र होगा। सभी धर्मों में पद्य में लिखी गई ज्ञान की बातों के साथ ऐसा ही हुआ है। बाइबल के विषय में भी लोगों ने स्वीकार कर लिया कि पाल ही ईसा मसीह के सभी प्रकाशनों का आयोजन करेंगे। वह ईसा मसीह के पुनर्जन्म तथा निर्मल अवधारणा के विषय में नहीं छापना चाहता था। यह सारी बातें उसके मस्तिष्क में थीं और यही कारण था कि थॉम्स को भारत आना पड़ा और जॉन ने कुछ भी लिखने से इन्कार कर दिया। क्योंकि पाल जैसे लोग कार्यकारी बन बैठते हैं और सोचते हैं कि वह इन कार्यों के लिए जिम्मेदार हैं, जबकि उनसे न तो इन्हें करने की योग्यता होती है और न ही इन कार्यों को करने का अधिकार उन्हें है। परिणाम स्वरूप ईसाईमत में मानव के अन्तरूत्थान के प्रति एक बहुत ही गलत दृष्टिकोण बना लिया। इसके परिणाम आज आप देखें। कैथोलिक चर्च में घटित होने वाली घटनाओं को आप देखें तो आश्चर्यचकित हो जाते हैं। जिस संस्था में सभी प्रकार की नालायकियां हो रही हैं वह किस प्रकार धार्मिक हो सकती हैं? मेरा जन्म भी ईसाई परिवार में हुआ। जिस प्रकार ये लोग पूरे अधिकार के साथ ईसा मसीह के जीवन के विषय में बातचीत करते थे और व्याख्या करते थे उससे मुझे आघात लगा। एक के बाद एक पुस्तकें लिखी गईं। एक से एक उपदेश दिए गए। मुझे लगा कि इनके कथनों में कोई सच्चाई नहीं है। मेरे पिता जी ने भी यही महसूस किया क्योंकि ये सारी पुस्तकें ईसा मसीह के जीवन के बहुत साल बाद आईं थीं। इन पुस्तकों के लेखक भी इसके अधिकारी न थे। वे आध्यात्मिक लोग न थे। वे तो केवल सत्ता-लोलुप थे और धर्म में सत्ता प्राप्त करना चाहते थे। धर्म की शक्ति तो अन्तर्निहित है। इसे जागृत किया जाना चाहिए। मैं इस देश के तथा अन्य देश के सूफियों को धन्यवाद देना चाहूंगी जिनके कारण लोग आज भी सोचते हैं कि इन पुस्तकों में लिखे शब्दों और बातों में कुछ है।

मानव के लिए यह भी एक वरदान है कि सभी देशों में कोई न कोई एक ऐसा महान पुरुष पैदा हुआ जिसने वास्तविकता और सत्य की बात की। यद्यपि इन सन्तों की भर्त्सना की गई,

कष्ट दिए गए और बहुत से लोगों की हत्या कर दी गई। मैं देखती हूँ कि लोग सत्य और वास्तविकता की बात नहीं सुनना चाहते। परन्तु कल यह देखकर मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ कि मुस्लिम लोग अब एकत्र होकर यह समझने लगे हैं कि रोजमर्रा के कर्मकाण्डों से ऊपर उनका एक उच्च जीवन भी है। कर्मकाण्डों से परिपूर्ण जीवन जो उन्होंने बिताया है, जिस प्रकार से घोर परिश्रम उन्होंने किया है, हज के लिए 40 दिन का उपवास जो उन्होंने किया है, इन सभी चीज़ों के बावजूद भी उनमें परस्पर एकता न थी और मैं हैरान थी कि बहुत से स्थानों पर तो वे एक दूसरे की हत्या करने में लगे थे। ऐसा किस प्रकार हो सकता है? इस प्रकार के दस्तूर उन्हें सामूहिक न बना पाए। वे सामूहिक न थे। उनकी भिन्न पहचानें थी, भिन्न पंथ थे जिनका पथ प्रदर्शन पूर्णता अज्ञानी लोग कर रहे थे।

अत: हमें लोगों की एकता, इनके सामूहिक स्वभाव का उत्सव मनाना चाहिए-उनके सामूहिक स्वभाव का जो सत्य से भटक चुके थे। सत्य के विषय में उन्हें बिल्कुल भी ज्ञान न था परन्तु एक साधक कभी भी इन स्थितियों में शान्त नहीं हो सकता। वह खोजता ही रहता है जब तक उसे सत्य प्राप्त नहीं हो जाता। परन्तु कुछ साधक अपने ही ढंग से देखते हैं और साधना में ही खो जाते हैं। उन्हें यह समझाना कठिन होता है कि तुम पथभ्रष्ट हो गए हो। यह बात उन्हें अपने जीवन से, अपनी उपलब्धियों से देखनी चाहिए कि उन्होंने क्या प्राप्त किया है? क्या उन्हें कुछ अनुभव हुआ? अपनी उपलब्धियों के प्रति विश्वस्त होने के लिए आपको चाहिए कि आप इनका सत्यापन करें। इसे आप लोगों पर आजमा सकते हैं, अपने आप पर आजमा सकते हैं; जो भी कुछ आप हैं आप अपनी अंगुलियों के सिरों पर जानते हैं।

कुरान में कहा गया है कि कयामा के वक्त अर्थात् आपके पुनर्उत्थान के समय-दो चीजें हैं कयामत और कयामा। बहुत से लोग इनका अन्तर नहीं जानते। कयामा का अर्थ है पुर्नजन्म का समय और कयामत का अर्थ है प्रलय। तो कहा गया है कि कयामा के समय आपके हाथ बोलेंगे और आप चैतन्य लहरियाँ अपनी अंगुलियों के सिरों पर महसूस करेंगे। मैं कहना चाहूँगी कि जो लोग वास्तव में मुस्लिम हैं, जो समर्पित है और जिन्हें परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करने के लिए उच्च पद प्राप्त करने के लिए चुना गया है उनके हाथ बोलने चाहिए अथवा वे मुस्लिम नहीं है। मैं उन्हें मुस्लिम नहीं कहूँगी। वे मानव तो हो सकते हैं परन्तु मुस्लिम नहीं। अत: जो भी लोग स्वयं को मुस्लिम मानते हैं उनके लिए आवश्यक है कि वे चैतन्य लहरियां महसूस करें और कयामा-पुनर्उत्थान के समय उनके हाथ बोलें। कयामा कयामत नहीं है। इन दोनों शब्दों के विषय में लोगों के मस्तिष्क में बहुत भ्रम है। **तो जो लोग चैतन्य लहरियों के माध्यम से अपने हाथों पर अपनी उपलब्धियों का सत्यापन कर सकते हैं तथा अन्य लोगों के विषय में जान सकते हैं, कुरान के मुताबिक वही सच्चे मुस्लिम हैं।** परन्तु मुसलमान लोगों को यह बात किसी ने नहीं बताई। यह सब वह नहीं जानते। उनके लिए तो मक्का जाकर वापस आ जाना ही सभी कुछ है। हज करने के बाद वे

हाजी कहलवाते हैं, बस सब समाप्त।

एक अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न जो उठता है वो ये है कि मोहम्मद साहब मूर्ति पूजा के बिल्कुल विरूद्ध थे फिर भी उन्होंने मक्का में काले रंग के वर्गाकार पत्थर की परिक्रमा करने को क्यों कहा? उसका क्या उद्देश्य था? वह पत्थर इतना महत्वपूर्ण क्यों था? किसी मुसलमान से यदि आप यह प्रश्न पूछें तो वह कहेगा कि यह उनका आदेश था। परन्तु आप प्रश्न कर सकते हैं कि आखिरकार ऐसा क्यों? वो भी तो एक पत्थर ही है। तो मोहम्मद साहब ने उसकी परिक्रमा करने के लिए क्यों कहा? बहुत सी मूर्तियाँ थीं, और जिस प्रकार भारत में करते हैं 'लोगों ने उनकी पूजा करनी आरम्भ कर दी'। परन्तु यह पत्थर स्वयंभू था और इसका वर्णन भारतीय धर्मग्रन्थों में किया गया है कि एक मक्केश्वर शिव भी हैं। भारत में भिन्न स्थानों पर शिव हैं, वहाँ ज्योर्तिलिंग है। मैं ये बात आपको बता रही हूँ परन्तु आपको इस पर विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है। वहाँ जाकर अपनी चैतन्य लहरियों पर सत्यापित करें कि ये शिव हैं कि नहीं। इस काले पत्थर के विषय में भी यही बात है। तो मोहम्मद साहब ने पता लगाया कि ये मक्केश्वर शिव हैं और श्री शिव का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए लोगों को इनकी परिक्रमा करनी चाहिए। परन्तु ये भी कर्मकाण्ड बन गया। ये सारा कार्य ही कर्मकाण्ड बन गया और कोई भी इस कर्मकाण्ड से बच न पाया।

इसाई धर्म में भी यही बात है। आज वो दिन है जब लोग अपने अपने अपराधों के लिए पश्चाताप और दोष-भावना की बात जोर-शोर से कर रहे हैं। परन्तु उन्होंने ये अपराध किए क्यों? वे तो अच्छाई के और सदाचार के लिए अधिकारी थे तो उन्होंने कुकृत्य क्यों किए? क्यों उन्होंने गलत कार्य किए? अब वे परमात्मा से क्षमा मांग रहे हैं। ये अपराध उन्होंने इसलिए किए क्योंकि वे आत्मसाक्षात्कारी न थे, न सहजयोगी थे। सहजयोगी यदि कोई गलत कार्य करने का प्रयत्न करते हैं तो अपनी अंगुलियों के सिरों पर जान जाते हैं कि वे गलत कर रहे हैं। **हम भी उन्हें कह सकते हैं कि सहजयोग से बाहर हो जाओ। परन्तु सहजयोगियों के लिए यह भयानक दण्ड है सहजयोग से बाहर चले जाने की बात उन्हें अच्छी नहीं लगती क्यों? क्योंकि उन्हें लगता है कि वे सच्चाई से पृथक किए जा रहे हैं सत्य के सभी आशीर्वादों से वे वंचित हो जाते हैं।** वे इस प्रकार सोचते हैं! देखा जाए तो दण्ड कुछ भी नहीं है क्योंकि हम तो केवल उनसे सहजयोग छोड़ देने के लिए कहते हैं! देखने के लिए यह दण्ड कुछ भी नहीं है। परन्तु **सहजयोग पूर्ण स्वतन्त्रता है। सहजयोग पूर्ण आशीर्वाद है। सहजयोग पूर्ण शान्ति एवं आनन्द है।** आश्चर्य की बात है कि यदि आप कुरान पढ़ें तो जान जाएंगे कि मोहम्मद साहब यही शान्ति स्थापित करना चाहते थे। परन्तु ऐसा न हुआ। मैं कश्मीर के एक व्यक्ति से मिली, उसने पूछा कि शान्ति कहाँ है? सभी लोग आपस में लड़े जा रहे हैं। हम शान्ति चाहते हैं। परन्तु उसकी एक बात सुनकर हैरानी हुई, उसने कहा कि भारत में आपको बहुत शान्ति मिलती है। कहने लगा कश्मीर तो पागलों का स्थान है। यहाँ पर हर समय सभी को चुनौती मिलती रहती

है और इस्लाम के नाम पर हर चीज़ पर आक्रमण होता है। मैंने कहा,"यह इस्लाम नहीं है। **इस्लाम का अर्थ है समर्पण।" कहने लगा,"आप लोग यदि समर्पित होंगे तो ये लोग आपका वध कर देंगे।** हम सुरक्षित नहीं है। अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि अब मुसलमान स्वयं इस बात को महसूस कर रहे हैं कि यह कर्मकाण्डों से पूर्ण परमेश्वरी जीवन नहीं हो सकता क्योंकि परमात्मा के लोग तो सब समान होते हैं। विश्व भर के सूफियों को देखो। मैंने उन्हें पढ़ा है। तुर्की के सूफियों को भी मैंने पढ़ा है और अन्य स्थान के सूफियों को भी। भारत में भी सूफी थे यद्यपि उन्होंने कभी स्वयं को सूफी नहीं कहलवाया। आप जो चाहे सोचते रहें। मेरे विचार से सूफी का अर्थ है साफ, स्वच्छ, पावन। स्वच्छ लोग ही सूफी हैं। अपनी स्वच्छता में वे परमात्मा की कृपा, उनके प्रेम और दिव्य शान्ति के अतिरिक्त कुछ नहीं देखते। उन्होंने कभी युद्ध की बात न की। युद्ध की बातें करने वाले व्यक्ति को दिव्य शान्ति का अधिकार नहीं होता।

युद्ध पूर्णत: पागलपन की तरह से है। पशु भी इस तरह से नहीं लड़ते। युद्ध तथा एक दूसरे की हत्या करने के लिए जब हम सोचते हैं तो पशुओं से भी बदतर होते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। इस जघन्यता को सदा-सदा के लिए रोक देना चाहिए। किसी पर जब तक आक्रमण न हो तब तक व्यक्ति को किसी की हत्या करने का अधिकार नहीं है। अपने पुनर्उत्थान के विषय में हम सुनते हैं कि हम बहुत सी चीज़ों से ऊपर हैं, हमारे अन्दर वो सारे विध्वंसक गुण समाप्त हो गए हैं। संस्कृत में इन्हें षड्रिपु कहते हैं। हमारे छ: दुश्मन हैं काम, क्रोध, मद, मत्सर, लोभ और मोह। काम का अर्थ है यौन उद्दण्डता, क्रोध यानि गुस्सा, मोह अर्थात लिप्सा, मद का मतलब है अहं और मत्सर का अर्थ है ईर्ष्या, छठा लोभ है। अज्ञानता, परवरिश, शिक्षा आदि के कारण ये सारी चीज़ें हमारे संस्कार बन गई थी। जब कुण्डलिनी जागृत होती है और आप परमात्मा के साथ, एकरूप हो जाते हैं तो ये सारे दुर्गुण छूट जाते हैं। तत्पश्चात् आप दृढ़ धरातल पर होते हैं। आप महसूस करते हैं कि आपने सत्य को पा लिया है और अब इन विध्वंसक आदतों का आनन्द नहीं ले सकते। ये षड्रिपु आपको मुक्त कर देते हैं।

अपने अन्दर आप परमेश्वरी साम्राजय में प्रवेश कर जाते हैं। मानव का यही सच्चा पुनर्जन्म है। आप जानते हैं कि यद्यपि लोग पुस्तकों को नष्ट करते हैं, उनके अर्थों को बिगाड़ते हैं, फिर भी सूक्ष्म चीज़ें बनी रहती हैं। उदाहरण के रूप में ईस्टर के दिन हम अण्डे भेंट करते हैं। अण्डे भेंट करने का क्या अर्थ है? सर्वप्रथम तो अण्डा हम इसलिए भेंट करते हैं क्योंकि यह परिवर्तित हो सकता है। एक छोटे चूजे का रूप धारण कर सकता है, अण्डे का पुनर्जन्म हो सकता है। अण्डे में पुनर्जन्म लेने की योग्यता है। ईस्टर के प्रतीक के रूप में जब आप अण्डा लेते हैं तो इसका मतलब है कि आप एक भिन्न व्यक्ति बन सकते हैं। एक सुधरे हुए और महान आध्यात्मिक व्यक्ति। इसका अर्थ है कि आप आध्यात्मिक व्यक्ति बन सकते हैं। लोग नहीं जानते कि हम अण्डे क्यों भेंट करते हैं? मैंने यह बात बहुत से लोगों से पूछी। स्वयं को ईसाई

मत के महान धुरन्धर समझने वाले पादरियों से भी मैंने ये बात पूछी। वे न जानते थे कि अण्डे क्यों भेंट किए जाते हैं।

आप यदि श्रीगणेश के जन्म की कथा को पढ़ें तब आप जान पाएंगे, आप हैरान होंगे, कि ये लिखा हुआ है कि इन्हें ब्रह्माण्ड कहा जाता था। ब्रह्माण्ड अर्थात् ब्रह्मा जी का अण्डा। उसने अस्तित्व धारण किया और इसका आधा भाग महा-विष्णु बन गया अर्थात् ईसा मसीह और आधा भाग श्री गणेश के रूप में बना रहा। कहा जाता है कि जन्म लेते ही महाविष्णु ने पिता के लिए रोना शुरू कर दिया। इसके विषय में सोचें। वे अपने पिता को खोज रहे थे! ईसा मसीह को यदि आप देखे तो वे अपनी पहली दो अंगुलियाँ उठाते हैं। किसी भी अन्य अवतरण ने इन दो अंगुलियों का उपयोग नहीं किया। आप जानते हैं कि पहली अंगुली विशुद्धि की है और दूसरी नाभि की। इसका अर्थ है वे अपने पिता की बात कर रहे हैं जो नाभि के शासक है। वे कौन हैं? ये आप अच्छी तरह जानते हैं। वे विष्णु हैं जो श्री कृष्ण के रूप में भी अवतरित हुए। तो ईसा मसीह इस बात की ओर इशारा करते हैं कि वे दोनों मेरे पिता हैं। कितनी स्पष्टता पूर्वक उन्होंने ये कार्य किया है! अंगुलियाँ उठाने की कोई अन्य मुद्रा, अन्य शैली उन्होंने क्यों नहीं अपनाई? उन्होंने अपनी ये दो अंगुलियाँ उठाईं। इस प्रकार उन्होंने कहा कि मेरे पिता श्री विष्णु ही हैं जो कि श्री कृष्ण भी हैं। श्री कृष्ण की जीवनी में कहा गया है कि महाविष्णु आपके पुत्र होंगे। ये सारी चीजें एक ही स्थान पर नहीं लिखी हैं। अलग-अलग लिखी हैं। परन्तु यदि आपकी सूझ-बूझ ठीक है तो आप उनके पारस्परिक सम्बन्ध समझ सकते हैं। आप समझ सकते हैं कि ईसामसीह श्री विष्णु और श्रीकृष्ण के पुत्र थे और उन्हें आशीर्वाद प्राप्त था कि वे पूरे ब्रह्माण्ड के आधार बनेंगे। ये बात अत्यन्त स्पष्ट रूप से कही गई थी कि आप पूरे ब्रह्माण्ड के मूलाधार होंगे।

अण्डे का आधा भाग श्री गणेश हैं जो एक प्रकार से कुण्डलिनी का आधार है। वे कुण्डलिनी की देखभाल करते हैं और माँ के पावित्र्य की देखभाल करते हैं। दूसरा भाग जिसकी अभिव्यक्ति हुई है वे ईसा मसीह हैं जो पूरे ब्रह्माण्ड के आधार हैं। अतः स्वाभाविक रूप से उन्हें चारित्रिक आधार ही बनना था क्योंकि वे श्री गणेश के ही अंग प्रत्यंग हैं और मानव के चारित्रिक आधार हैं। चरित्र के कारण ही आपको संभाला जाएगा अन्य प्रकार की मूर्खताओं के कारण नहीं। केवल चारित्रिकता के आधार पर जिसका इसाई मत को मानने वाले लोगों के जीवन में अभाव है। हैरानी की बात है कि वे सभी चीजों की आज्ञा देते हैं! कैथोलिक चर्च तथा अन्य चर्चों के अनुसार जब तक आप तलाक नहीं ले लेते आप जो चाहे करते रहें। विवाहोपरांत भी आप जो चाहे करें। मुझे बताया गया कि वैटिकन चर्च के साथ भी यही समस्या है। स्वयं को साक्षात्कारी (Baptised) कहलाने वाले लोग ऐसा किस प्रकार कर सकते हैं। पादरी लोग बप्तीस्म का बहुत बड़ा उत्सव करते हैं। कुण्डलिनी कहाँ है और सहस्रार कहाँ है और किस प्रकार आप अपना पुनर्जन्म लेते हैं। इनमें कोई पुनर्जन्म नहीं होता केवल कोई पादरी

व्यक्ति के सिर पर हाथ रख देता है और कह देता है कि आपका बप्तीस्म हो गया। आत्मसाक्षात्कारी के सिर पर यदि कोई पादरी हाथ रख दें तो उसके साथ समस्या हो जाती है। इस प्रकार एक गैर साक्षात्कारी के सिर पर हाथ रखने से भी बच्चों को समस्या हो सकती है। पादरी जब बच्चों को आशीर्वाद देते हैं तो बहुत से बच्चे जोर-2 से रोने लगते हैं क्योंकि ये बच्चे तो आत्मसाक्षात्कारी हैं परन्तु पादरी नहीं हैं। बहुत ही दिलचस्पी की बात है। परन्तु लोग कहते हैं पादरी बुरे हो सकते हैं ईसामसीह नहीं। परन्तु पादरी और ईसामसीह में किस प्रकार सम्बन्ध हो सकता है। ईसा-मसीह उच्च चरित्र के पक्षधर थे। उनके विषय में भी आजकल लोग सभी प्रकार की उल्टी-सीधी बातें कह रहे हैं। किसी भी चरित्रवान व्यक्ति को वे नहीं समझ सकते। हम लोग इस प्रकार से पतित हो गए हैं। पावन चरित्र का तो उनकी दृष्टि में कोई अर्थ ही नहीं है। आप जो चाहे करते रहें। बस, चर्च जाकर इसे स्वीकार (Confess) कर लें।

आधुनिक धर्म की यही मूर्खताएं हैं। हर धर्म की अपनी समस्याएं हैं। परन्तु सबसे बुरी स्थिति तब होती है जब पूरा विश्व नेता के रूप में उन्हें स्वीकार कर लेता है। इस प्रकार के चरित्रहीन जीवन की आज्ञा आप किस प्रकार लोगों को दे सकते हैं। इस चरित्रहीनता को किस प्रकार सहन कर सकते हैं जबकि आप ईसा-मसीह का अनुसरण करना चाहते हैं! ऐसा हो ही नहीं सकता। वे तो सद्चरित्र की मूर्ति थे। वे श्री गणेश हैं। कैसे आप चर्चों, मन्दिरों में आने वाले लोगों को चरित्रहीनता की आज्ञा दे सकते हैं! ऐसे लोगों की उपलब्धि क्या है? ईसा-मसीह के जीवन का, उनके पूर्ण-अस्तित्व का, आधार नैतिकता और पावनता की स्थापना है।

आदिशक्ति ने सर्वप्रथम श्री गणेश का सृजन किया क्योंकि वे चाहती थीं कि सारा वातावरण शुद्ध हो। वे चाहती थीं कि मानव अपनी पावनता और प्रकाश प्रसारित करते हुए अपने व्यक्तित्व का आनन्द लें। शीशा यदि गन्दा हो और आप उस पर रोशनी डालें तो वह प्रकाश किस प्रकार उसमें से गुजर पाएगा। अनैतिक जीवन दूसरों को प्रकाश नहीं दे सकता और न ही आपके आन्तरिक प्रकाश को प्रदर्शित कर सकता है। अपवित्रता के लिए भी ये दोनों बातें पूरी तरह से सच साबित होती हैं। परन्तु लोग कहते हैं कि उन्हें ये सब स्वीकार करना होगा क्योंकि यदि आप अपने धर्म में बहुत से लोगों को लाना चाहते हैं तो आपको बहुत सी चीजें स्वीकार करनी होंगी। उनमें से अपवित्रता एक है! इसके विषय में आप सोचकर देखें! अगन्य चक्र, जहाँ ईसा-मसीह विराजमान हैं, आपकी दृष्टि, ही यदि अपवित्र है, लोभ और वासना से परिपूर्ण है तो आप ईसा-मसीह विरोधी हैं। आपकी दृष्टि यदि पावन है, शुद्ध है केवल तभी आप परमात्मा के प्रेम का आनन्द उठा सकते हैं अन्यथा नहीं। किसी अन्य सहजयोगी या योगिनी के प्रेम का आनन्द आप तभी उठा सकते हैं जब आप पूर्ण हों और जब आपकी दृष्टि पावन हो। इसके विषय में सोचकर देखें। परन्तु यदि आपकी दृष्टि अस्थिर है, दोषमय है, तो मैं नहीं समझ पाती, कि किस प्रकार आप स्वयं को इसाई कह सकते हैं। आप ऐसा नहीं कर सकते। जो भी प्रमाण पत्र आपके

पास हों परन्तु ऐसी स्थिति में भी आप अपने को इसाई नहीं कह सकते। क्योंकि ईसा मसीह को मानने वाले लोगों का जीवन पूर्णत: नैतिक होना चाहिए, पूर्णत: मानवीय। आपके अन्तर्अस्तित्व की यह अनिवार्यता है कि आप अपनी पावनता का आनन्द उठाएं और सर्वोपरि आपकी दृष्टि पूर्णत: पवित्र हो। पाश्चात्य जीवन के बारे में जो मैं जान सकी हूँ वो ये है कि उनकी दृष्टि पवित्र नहीं है। ये लोग चर्च जाते हैं परन्तु इनकी दृष्टि इधर-उधर भटकती रहती है। ऐसा कैसे हो सकता है? यदि आप ऐसा सोचते हैं कि ईसा-मसीह का पुनर्रूत्थान हुआ था और आपका भी पुनर्जन्म हुआ है तो आप इस प्रकार कैसे सोच सकते हैं? सर्वप्रथम ये देखें कि आपकी आंखों में पावन प्रेम होना चाहिए। पावन प्रेम का कोई सम्बन्धित मूल्य नहीं होता और न ही इसे दूषित किया जा सकता है। इसमें वासना और लोभ का कोई स्थान नहीं है। आपके मस्तिष्क से ये दोनों दुर्गुण पूर्णत: समाप्त होने चाहिए। आजकल लोगों के मस्तिष्क में भयानक लोभ हैं। मैं नहीं जानती कि उनके मस्तिष्क में क्या-क्या भरा हुआ है क्योंकि मानव की अनैतिकता का बहुत अधिक अध्ययन मैंने नहीं किया है। मैं तो केवल आप जैसे सुन्दर लोगों को ही देखती हूँ। परन्तु जब मैं इस तथाकथित पाश्चात्य संस्कृति को समझने का प्रयत्न करती हूँ तो हैरान होती हूँ कि शेक्सपियर जैसे, जो मेरी दृष्टि में अवधूत थे, व्यक्ति के जीवन को दर्शाने के लिए भी वे उन्हें स्त्रीलम्पट के रूप में दर्शाते हैं। अवधूत एक उच्चकोटि का योगी होता है जो जन्म से ही विध्वंसक आदतों से परे होता है। ऐसे व्यक्ति की वो कल्पना ही नहीं कर सकते जो नैतिक रूप से उच्च कोटि के हों या जिनमें नैतिकता विवेक हो। ऐसे लोगों की वो कल्पना ही नहीं कर सकते। इस प्रकार के कार्य करने वाले लोग आत्मसाक्षात्कारी नहीं होते, वे सहजयोगी नहीं होते। यही कारण है कि नैतिकता का विचार उनके मस्तिष्क में नहीं आता। वे सोचते हैं कि हम भी अन्य लोगों जैसे हैं। वास्तव में उनमें से अधिकतर स्वयं को न्यायोचित्त ठहराने के लिए ऐसा करते हैं। महान पुरुषों के चरित्र का इतना भद्दा और भयानक वर्णन ये दर्शाता है कि अपनी मूल्य प्रणाली में मानव वास्तव में कितना पतित हो चुका है! किसी आदर्श व्यक्तित्व के विषय में वह सोच भी नहीं सकता। वे सोचते हैं ऐसा कहते हुए भी वे वास्तविकता से ऊपर की बातें कर रहे हैं। सत्य को वे नहीं जानते।

कल सूफी विचारों को बताते हुए उन्होंने आपकी चार अवस्थाओं का वर्णन किया। इससे मैं बहुत प्रभावित हुई। इनमें से एक चीज हकीकत है अर्थात वास्तविकता। आपको इसी वास्तविकता में उतरना चाहिए। किसी चीज़ को देखना मात्र, वास्तविकता नहीं है। किसी चीज़ को देखना ही नहीं है, हमें वह बनना है। आप अगर देखने लगते हैं तो आपको सफेद, लाल, पीला दिखाई देता है। परन्तु आप सफेद, लाल, पीले तो नहीं हैं। **जब आप सत्य बन जाते हैं तभी आपसे सत्य प्रसारित होता है। आप सत्य को देखते हैं, सत्य में रहते हैं, सत्य का आनन्द लेते हैं। यही वास्तविक जीवन है जिसे आप किसी असत्य काल्पनिक दिव्यता से छोटी चीज़ में नहीं उलझाते। जब आप ऐसा नहीं करते।**

तब आप सत्य होते हैं, हकीकत होते हैं और अपने व्यवहार में, अपनी बातों में, अपने जीवन में, अपनी सभी बातों में सत्य प्रसारित करते हैं। ये सब कार्य आध्यात्मिकता की महान शक्तिप्रदायक हैं। **सत्य पर खड़े व्यक्ति से सारा असत्य, गलत एवं विध्वंसक चीज़ें स्वतः ही दूर भाग जाएंगी। ये सारे गुण आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति के पूर्णतः अंग-प्रत्यंग होते हैं।**

तो पुनर्जन्म घटित हो चुका है इसमें कोई सन्देह नहीं। आपके हाथ बोलने लगे हैं। मैं आपको न तो कोई आदेश देना चाहती हूँ और न ही कोई निश्चित मार्ग बताना चाहती हूँ जिस पर आप चलें। आप स्वतन्त्र हैं। क्योंकि आप प्रकाश हैं। जब आप स्वयं प्रकाश हैं तो मुझे बताने की क्या आवश्यकता है कि आप किस रास्ते पर जाएं। आप जानते हैं कि आपके पास प्रकाश है। अतः आप स्वयं अपने प्रकाश से ज्योतित मार्ग पर अपना ही अनुसरण करें। किसी अन्य ने आपको नहीं बताना कि ऐसा करो ऐसा मत करो। आपको खुद तोलना होगा कि आपमें क्या दोष है। इसे आपने नहीं करना। अब भी यदि आप ये गलती कर रहे हैं तो आप जान लें कि अभी आपको इससे ऊपर उठना है। कुरान वर्णित 'नबी' आप ही लोग हैं। आप ही लोग हैं जिन्होंने पूरे विश्व का पुनर्उत्थान करना है। जीवन की गन्दगी में फँसे दीन-दुखियों की आपने ही सहायता करनी है। इन थोड़े से सूफी लोगों की ओर देखो, ये अत्यन्त स्वच्छ थे। किस प्रकार उन्होंने अन्य लोगों को बेहतर ज़िन्दगी की ओर मोड़ दिया! आप भी वही लोग हैं। आपने भी लोगों के जीवन का मार्ग प्रशस्त करना है। आपका यही कार्य है। ये न सोचें कि क्या हो रहा है, लोग कितने मूर्ख हैं दुष्चरित्र हैं। ये सब बातें भूल जाएं। आपको केवल इतना जानना है कि आप क्या हैं? आपने स्वयं के विषय में और परम शुद्ध होने के नाते अपनी ज़िम्मेदारी के विषय में चेतन होना है। जैसे मेरा नाम (निर्मल) दर्शाता है आप मेरे बच्चे हैं, आप निर्मल के बच्चे हैं अर्थात् पावनता के। पावनता ही आपके जीवन का आधार है। स्पष्ट रूप से देखें कि कला को, सुन्दर कृतियों को और सुन्दर मस्तिष्क द्वारा सृजित कृतियों का मूल्यांकन करने में कोई गलती न हो। आपके मूल्यांकन में न तो लालच हो न तो वासना। शुद्ध मूल्यांकन। पावनता ही एक मात्र सन्देश है। एक बार जब आप अन्दर से पावन हो जाएंगे तो आप स्वयं से प्रेम करेंगे। वैसे ही जैसे मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ। तुम भी सबसे प्रेम करोगे। तभी आप 'प्रेम' शब्द को समझेंगे जिसका उद्भव पावनता से होता है। अपनी पावनता के पुष्पीकरण और उसकी सुगन्ध का आप हर समय आनन्द लेंगे और आपका प्रेम सदैव बहेगा, उन लोगों की ओर जिन्हें इस प्रेम की आवश्यकता है और जिनकी देखभाल होनी आवश्यक है। 'आसुरी प्रवृत्ति' वाले लोगों की चिन्ता न करें। मैं केवल यही शब्द उपयोग कर सकती हूँ क्योंकि उनके विषय में बहुत सी बातें कही जा सकती हैं। उन्हें विनाशकारी बना रहने दें। वे तो स्वयं को ही नष्ट कर रहे हैं। हम उनकी चिन्ता क्यों करें? **वे सोचते हैं कि वे दूसरों को नष्ट कर रहे हैं परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। वे स्वयं को ही नष्ट कर रहे हैं।**

उन्हें भूल जाएं, भुला दें उन्हें। आप स्वयं को पूरे विश्व के उत्थान के लिए जिम्मेदार मानें, थोड़े से लोगों के लिए नहीं। आप अत्यन्त विवेकशील हैं। ज्ञानवान हैं और सूझ-बूझ वाले हैं, ईसामसीह के अशिक्षित शिष्यों जैसे नहीं हैं जिन्हें आत्मसाक्षात्कार तो मिल गया परन्तु वे आपके स्तर के न थे और न ही इतना कुछ समझते थे। वे केवल उस स्तर तक पहुँच सके जहाँ से इस झंझट भरे इसाई मत का उदय हुआ। परन्तु आप ऐसे झंझट नहीं खड़े कर सकते। आप तो ऐसे गुँजायमान होने वाले नए धर्म का सृजन करेंगे जो सार्वभौमिक होगा।

ये देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि अब विश्व भर के लोग सहजयोगी हैं। सर्वत्र फैला यह सार्वभौमिक आन्दोलन है। तथाकथित धर्मों के सीमित विचारों से इसे कुछ नहीं लेना देना। इन संकुचित विचारों से इसे कुछ नहीं लेना देना। इन्हीं संकुचित विचारों ने सभी धर्मों को नष्ट किया है। इस्लाम, इसाई मत, हिन्दु धर्म सब नष्ट हुए हैं और बुद्ध धर्म तो सबसे बदतर स्थिति में आ गया है। बुद्ध धर्म में लोग सभी कुछ त्याग देते हैं, अपनी सभी चीज़ों को त्याग देते हैं। अपनी सारी सम्पत्ति गुरु को दे देते हैं। इसकी आप कल्पना करें! गुरु इतने लालची और भयानक लोग हैं! ऐसा व्यक्ति किस प्रकार पुनर्जन्म प्रदान कर सकता है? वह तो स्वयं ही अत्यन्त लालची दूसरों को भ्रमित करने वाला और दूसरों की चीजें छीनने वाला है। इसाई धर्म में भी यही बात है लोग मठवासिनियाँ (Nuns), पादरी (Fathers), मठवासी (Brothers) और पता नहीं क्या-क्या बन जाते हैं? परन्तु उनके अन्दर कोई परिवर्तन नहीं होता। मेरे पास कोई व्यक्ति आया। मैंने उससे कहा तुम पादरी क्यों बन गए? क्योंकि मेरे पास नौकरी नहीं थी। नौकरी न होने के कारण मुझे पादरी बनना पड़ा। क्या आप कल्पना कर सकते हैं? उसको कोई और नौकरी नहीं मिली तो उसने ये काम स्वीकार कर लिया। तब आपने क्या किया? उन्होंने मुझे समझाया कि मुझे क्या सिखाना है और सर्वप्रथम मुझे उसका अभ्यास करना पड़ा और सबकुछ जुबानी याद करना पड़ा। तत्पश्चात् मैंने ये सब बातें करनी शुरु कर दीं। मेरे विचार से वह कोई अत्यन्त भूत-बाधित व्यक्ति होगा। उसके पास अपना मस्तिष्क नहीं था। वह यह भी न जानता था कि उसे क्या बात करनी है। बाइबल का एक वाक्य लेकर वह उसके बारे में बोलता चला जाएगा और लोगों को उबाएगा। मैं हैरान थी कि पन्द्रह मिनट के अन्दर लोग चर्च से चले जाना चाहते थे। ज्यों ही उपदेश समाप्त होता, श्वास लेने के लिए लोग बाहर की ओर दौड़ते और परमात्मा का धन्यवाद करते। क्या धर्म आपको यही सब प्रदान करता है? क्या आपके अन्दर यही घटित होना चाहिए? नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए? धार्मिक होकर तो आप अपनी आत्मा का आनन्द लेते हैं, सामूहिकता का आनन्द लेते हैं, अच्छाई और नैतिकता का आनन्द लेते हैं। ये सारा अनुभव तो जीवनामृत जैसा है। जिससे मानव पूर्णतया परिवर्तित हो जाता है।

कर्मकाण्ड बहुत अधिक हैं। हिन्दू धर्म में कर्मकाण्डों का बाहुल्य है आप दाएं को बैठें, बाएं को बैठें, इस समय ये कार्य करें तथा अन्य बहुत सी चीजें। आपकी बहन की मृत्यु होने पर

आपको कितने दिन भूखा रहना है और पति की मृत्यु होने पर कितने दिन। जो चला गया वो चला गया समाप्त। शरीर समाप्त हो जाता है। तो आपका इतने दिनों तक व्रत करना बिल्कुल गलत है। व्रत करने से तो हो सकता है आपके अन्दर भूत प्रवेश कर जाएं। मैं तो ये कहूँगी कि इन कर्मकाण्डों का सृजन करने वाले लोग जो बहुत महान होने का दावा करते हैं वे किसी भी प्रकार से नैतिकता और उच्च जीवन के लिए जिम्मेदार नहीं है। वे अत्यन्त भौतिक एवं अर्थहीन जीवन व्यतीत करते हैं। मैं एक बार श्रीगणेश जी के मन्दिर गई, जहाँ स्वयंभू गणेश हैं, आठ स्वयंभू मन्दिरों में से एक। मैं हैरान थी कि वहाँ का पुजारी पक्षघात से पीड़ित था उसके भाई की मृत्यु भी पक्षघात के कारण हुई थी और उसका पुत्र भी पक्षघात का शिकार था। कहने लगा माँ ये श्री गणेश हमारे साथ क्या कर रहे हैं? मैंने कहा आप श्री गणेश के साथ क्या कर रहे हैं? इनसे आप कितना धन कमाते हैं? कहने लगा बहुत सा। और इस पैसे का आप क्या करते हैं? क्या इससे आप समाज का कोई हित करते हैं? क्या आप लोगों का जीवन बेहतर बनाने का प्रयत्न करते हैं? क्या आपका चित्त समाज की बेहतरी पर है या आप अपनी ही चिन्ता में लगे हुए हैं? इन सबके परिणाम स्वरूप उसको पक्षाघात हुआ, उसके भाई को पक्षाघात हुआ, उसके पुत्र को पक्षाघात हुआ और इसके लिए वह श्री गणेश को दोष दे रहा था! कहने लगा,"क्या ये सच्चे गणेश हैं? मैंने कहा,"हाँ, ये तो सच्चे गणेश हैं परन्तु तुम नहीं हो, तुम इनके आशीर्वाद के योग्य नहीं हो। कहने लगा,"माँ आप जो चाहे कहें, परन्तु मुझे ठीक कर दें।" मैंने कहा,"पहले वचन दो कि मन्दिर से जो भी धन आएगा उसे आप लोगों की बेहतरी पर खर्च करोगे।" परन्तु वो ऐसा कैसे कर सकते हैं? वे साक्षात्कारी लोग नहीं हैं। बेतुके वस्त्र पहनकर मैं इन सारे पादरियों को घूमते देखती हूँ। ये सब मृत शरीरों की तरह से अपनी भयानक लहरियाँ लिए हुए चारों तरफ घूम रहे हैं। मेरी तो समझ में नहीं आता। लोग बहुत ही सीधे हैं। वे सोचते हैं कि अरे ये तो पादरी हैं, पुजारी हैं, इनका सम्मान होना ही चाहिए। लोग ये भी नहीं देखते और न ही मूल्यांकन करते हैं कि अपने आपको पादरी या पुजारी कहने वाले व्यक्ति का आध्यात्मिक मूल्य क्या है? ये मूल्यांकन आपका कार्य है। आपको उनसे झगड़ा नहीं करना, न ही उनकी भर्त्सना करनी है और न ही उनके दोषों की व्याख्या। इसकी कोई आवश्यकता नहीं। आपको केवल इतना समझना है कि आप उनसे भिन्न हैं, आपमें इसका अधिकार है इसकी योग्यता है। इसी अधिकार और आत्मविश्वास के साथ सर्वत्र जाकर आपको लोगों की रक्षा करनी है। **आप आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हैं, आपको पुनर्जन्म प्राप्त हो गया है, आप योगी हैं, इस बात को मैं मानती हूँ। परन्तु आपका कार्य क्या है? ये घटना आपके साथ क्यों घटी? आपमें ये प्रकाश क्यों आया? इसलिए कि इन नेत्रहीन लोगों को अपने हाथों में लेकर इन्हें प्रकाश की ओर ले जाएं। आपके पुनर्जन्म का यही अर्थ है। पुनर्जन्म केवल आपके उत्थान के लिए ही नहीं, यह परमेश्वरी कृपा आपको इसलिए मिली है ताकि आप पूरे विश्व को**

जहाँ तक हो सके दिव्य बना सकें। आपने कितने लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया? कितने लोगों से आपने सहजयोग के विषय में बात की? मैं आपको बताती हूँ कि एक बार मैं वायुयान में यात्रा कर रही थी और वहाँ एक महिला मेरे साथ सहयात्री थी। मैं हैरान थी कि वह मुझसे अपने पंथ, अपने मूर्ख गुरु के बारे में बातें करने लगी। निर्लज्जतापूर्वक वह बातें किए जा रही थी और मैं उसे सुन रही थी। मैंने सोचा कि सहजयोगी क्यों नहीं इस तरह से सहजयोग की बात करते, **सभी सहजयोगियों को सहजयोग के विषय में बातचीत करनी है। चाहे गलत लोगों से न करें परन्तु अच्छे लोगों से तो सहजयोग की बातचीत करनी ही है। आपने केवल यही कार्य करना है। इसी कार्य को करने के लिए आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ है। आत्मसाक्षात्कार आपको इसलिए नहीं दिया गया कि आप जंगल में चले जाएं या विश्व की नज़रों से गायब हो जाएं।** आपको आत्मसाक्षात्कार और पुनर्जन्म अन्य लोगों को प्रकाश-रंजित करने के लिए दिया गया है। **आप इसीलिए यहाँ पर हैं** और ये कार्य कर सकते हैं। बहुत से लोगों ने इस कार्य को किया है। आपमें से बहुत से लोगों ने यह कार्य किया है और मैं कहूँगी, आप चाहे पुरुष हो या महिला आपको यह कार्य करना है। आपकी माँ की आपसे यही प्रार्थना है कि अपने आत्मसाक्षात्कार का प्रयोग करें, आपका चित्त सदैव आत्मसाक्षात्कार पर होना चाहिए और इस बात पर कि आपने कितने लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया, कितने लोगों को आप बचाने वाले हैं? आपके करने के लिए यही साधारण सा कार्य है। बस आप लोगों की कुण्डलिनी उठा दें। ऐसा आप कर सकते हैं। आप देखें कि किस प्रकार अपने हाथ के इशारे से दूसरे लोगों की कुण्डलिनी उठा सकते हैं और उन्हें आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं। आपने कुछ नहीं करना और आपका जीवन भी अधिक कठिन नहीं है। आपका कार्य सुगमतम है। आपको केवल अपना हाथ उठाना होगा, आपके हाथ में शक्ति है, शंका करने के स्थान पर केवल अपना हाथ उठाकर आप अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं। इसीलिए मैं कहती हूँ आप लोग पुनर्जन्म पा चुके हैं, आप सब आत्मसाक्षात्कारी हैं और आपने ही इस पृथ्वी पर दिव्य स्वर्ग का सृजन करना है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

श्री आदिशक्ति पूजा

(जयपुर 11-12-94)

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम लोग आदिशक्ति का पूजन कर रहे हैं। जिसमें सब कुछ आ जाता है। बहुत से लोगों ने आदिशक्ति का नाम भी नहीं सुना। हम लोग शक्ति के पुजारी हैं, शाक्तधर्मी हैं और विशेष कर राजे-महाराजे सभी शक्ति की पूजा करते हैं। सबकी अपनी-2 देवियाँ हैं और उन सब देवियों के नाम अलग-2 हैं। यहाँ की देवी का नाम भी अलग है, गणगौर। लेकिन आदिशक्ति का एक बार अवतरण इस राजस्थान में हुआ जो वो सती देवी के रूप में यहाँ प्रकट हुई। उनका बड़ा उपकार है जो राजस्थान में अब भी अपनी संस्कृति, स्त्री धर्म, पति का धर्म, पत्नी का धर्म, राजधर्म हरेक तरह के धर्म को उनकी शक्ति ने प्लावित किया, Nourish किया।

सती देवी की गाथा आप सब जानते हैं। मुझे नए तरीके से बताने की जरूरत नहीं; पर वे स्वयं गणगौर थीं। उनका विवाह कर दिया गया परन्तु विवाह करके जब वो जा रही थीं तब कुछ गुण्डों ने घेर लिया और उनके पति को भी मार दिया। तब पालकी से बाहर आ कर उन्होंने अपना रूद्र रूप धारण किया और सबका सर्वनाश करते हुए खुद भी उन्होंने अपना देह त्याग दिया। इसमें जो विशेष चीज़ जानने की है कि बचपन से शादी होने तक किसी भी हालत में उन्होंने अपना स्वरूप किसी को बताया नहीं क्योंकि वो महामाया स्वरूप था।

आदिशक्ति को महामाया स्वरूप होना जरूरी है क्योंकि सारा ही शक्ति का जिसमें समन्वय हो, प्रकाश हो और हर तरह से जो हरेक शक्ति की अधिकारिणी हो उसे महामाया का ही स्वरूप लेना पड़ता है। उसका कारण ये है कि जो प्रचण्ड शक्तियाँ इस स्वरूप में संसार में आती हैं, सबसे पहले सुरभि के रूप में आई थी ये शक्ति, जो एक गाय थी। उसमें सारे ही देवी देवता बसे हैं और उसके बाद एक बार सती देवी के रूप में, एक ही बार इस राजस्थान में अवतरित हुई। मैंने आपसे बताया कि मेरा संबंध इस राजस्थान से बहुत पुराना है क्योंकि हमारे पूर्वज राजस्थान के चित्तौड़गढ़ के सिसौदिया वंश के थे।

आदिशक्ति की अनंत शक्तियाँ हैं और ऐसी कोई शक्ति नहीं जो उनके पास नहीं। लेकिन उन शक्तियों को छिपा कर ही रखना पड़ता है। उसके दो कारण हैं। एक तो कारण ये कि लोग गर जान जाएं कि ये आदिशक्ति हैं तो हर प्रकार के लोग उन पर प्रहार कर सकते हैं क्योंकि ये लोग सब बिल्कुल दुष्ट हैं, जाहिल हैं और परमात्मा के विरोध में खड़े हैं। भगवान के नाम पर पैसा कमाते हैं और उसका दुर्व्यवहार करते हैं। ये सारे ही लोग गर जान जाएँ कि

आदिशक्ति संसार में आई हैं तो या तो भाग खड़े होंगे या सब जुट कर के ये कोशिश करेंगे कि किसी तरह से आदिशक्ति का कार्य इस कलयुग में हो न पाए। उसके लिए बहुत ज़रूरी है कि महामाया का स्वरूप ले लिया जाए। दूसरा इस स्वरूप से एक बड़ा गहरा काम, सूक्ष्म काम करना है जो कभी भी किसी ने आज तक नहीं किया। वो है सामूहिक चेतना। सामूहिक तो छोड़िये, एक ही आदमी को पार कराने में लोगों को सालों लग जाते हैं। इस कार्य को करने में और वो भी बखूबी इस तरीके से कि किसी को कोई भी हानि नहीं पहुँचे। ऐसे ही जैसे नाव में बिठा करके आराम से दूसरे किनारे पहुँचाया जाए! मैंने कल भाषण अपने में बताया कि धर्म कितना विपरीत हो गया है। धर्म की बातें जिन्होंने करीं वो तो ठीक थे लेकिन जिनसे कहीं वो लोग गड़बड़ थे। सो उन्होंने धर्म को समझा नहीं, धर्म को एक बड़ी भ्रान्ति में डाल दिया कि गर कोई आदमी यह सोचने लग जाए-अपने धर्म के बारे में तो वो भाग खड़ा हो जाए क्योंकि धर्म के नाम के पीछे जो-जो तौर तरीके हैं वो बहुत भयंकर हैं। कहीं तो स्त्रियों की अवहेलना, कहीं तो बच्चों का दमन, तो कहीं लूटमार। हर तरह के गलत काम धर्म के नाम पर होते हैं। एक बार बंबई में बहुत सी गीता छप करके बाहर से आई, तो लोग बड़े खुश हुए कि अब हमारी गीता लंदन में छपने लगी। इससे बढ़ करके और क्या बात होगी! हिन्दुस्तानी तो वैसे ही अंग्रेज के पैर पे लोटता रहा और अब गीता अगर वहाँ छप गई तो हिन्दुस्तानियों ने सोचा वाह-2, कि वाह क्या कमाल हो गया! पर एक कोई थे कस्टम आफिसर, उनके दिमाग में आया कि आज तक कोई अंग्रेज सीधी-सादी हमारी हिन्दी भाषा नहीं बोल सकता तो ये कौन माई का लाल निकला है जिसने गीता को लिखा है संस्कृत में। कुछ तो गड़बड़ होगी। तो उन्होंने एक किताब खोली तो देखा कि उसमें व्हिस्की! समझ गए, सारी किताबों के अंदर व्हिस्की और ऊपर से गीता। तो मतलब ये कि गीता बहुत उच्च चीज़ है हिन्दुस्तानियों के लिए, गीता का नाम लेते ही चाहे वो कुछ जाने या ना जाने, माथे पर लगा लेते हैं। लेकिन... अंग्रेजों में इस तरह से जो छिपाने की शक्ति है वो कमाल की है, कि गीता को इस्तेमाल करो। कोई सी भी समझ लीजिए यहाँ टेबल गंदी हो गई तो उसमें फौरन हम प्लास्टिक बिछा कर दूसरा टेबलक्लॉथ बिछा कर उसको हम सुन्दर कर लेंगे और बार-बार मैं भी देखती हूँ कि कहीं भी जाइये तो बहुत से पर्दे लगे होंगे। मैंने कहा ये क्या है तो कुछ नहीं, कुछ नहीं। पर्दा हटाइये तो ऊपर से बहुत सारे गंदे कपड़े, ये वो। सो ऐब छिपाने की भी हमारे महामाया शक्ति में एक बहुत बड़ी त्रुटि है। क्योंकि ये लोग कहीं से कुछ सीख कर आए ही होंगे। चाहे हमने नहीं सिखाया हो पर किसी ने तो सिखाया ही होगा कि ये ऐब अपने कैसे छिपाए जाएँ और छिपा के उसको कैसे पचा लिया जाए। **जो हमारे ऐब हैं उसको हटाने के लिए हम प्रयत्नशील नहीं होते। उसको छिपाने में प्रयत्नशील होते हैं और दूसरों के ऐब देखने में हम बड़े होशियार होते हैं।** अब ये बिल्कुल विपरीत बात है। **महामाया की शक्ति इसलिए बनी है और विकीर्णित हुई कि आपके अंदर जो दोष हैं**

वो निकाले जाएँ और उसको अपने शरीर में आत्मसात किया जाए और फिर उसकी सफाई की जाए।

ये कार्य बड़ा कठिन है, ऐसा मुझे लगता था शुरू-2 में। लेकिन ऐसे कोई खास ऐब वाले लोग आए नहीं मेरे पास जो कि मुझे बड़ा दु:ख उठाना पड़े, सही बात तो ये है। वो लोग मुझे देखते ही भाग जाते हैं शायद इसलिए ये मेरे सामने कभी प्रश्न खड़ा नहीं हुआ। **पर आश्चर्य की बात है कि जो लोग भूत से ग्रसित हैं या जो लोग हमेशा बुरे काम करते हैं और जो लोग गुरूघंटाल हैं वो सब मुझे अच्छी तरह से जानते हैं, ना जाने कैसे! या** तो उनकी आंखें पीछे की ओर हैं या जो भी कहिए **वो मुझे पहले पहचानते हैं। सहजयोगी नहीं पहचान पाते।** हो सकता है उनकी आंखें चकाचौंध हो जाती हों, मुझे समझ में नहीं आता। पर आप किसी भी भूत ग्रस्त आदमी को ले आइये। वो थर-थर काँपने लगेगा और ऐसा भागेगा कि सोचे जैसे किसी ने हंटर मारा है। लेकिन सहजयोगियों का ऐसा नहीं। उनको पहचान भी इतनी नहीं है। अच्छी बात है, क्योंकि आदिशक्ति का एक स्वरूप जो महाकाली का है उसे आप देख लें तो वो पूरा गया काम से, भयंकर है, ये देख सकते हैं! हाथी-आथी भी देख सकते हैं। घोड़े भी देख सकते हैं। पर बाकी किसी को दिखाना बड़ी कठिन बात है। न जाने यहाँ-कितने लोग बैठेंगे?

लेकिन महाकाली का स्वरूप होना बहुत जरूरी है। जब तक महाकाली प्रकट नहीं होती। आपके अंदर बसी बाईं ओर (left side) की पकड़ जा नहीं सकती। बाईं ओर (Left side) की पकड़ का मतलब क्या है? सबसे पहले तो आप अपने Past के बारे में सोचते रहते हैं। दूसरी बात कि मेरे बाप ये थे और मेरे बाप के बाप ये थे, ये सोचते रहते हैं। नसीब है उनको अपना पूर्वजन्म याद नहीं आता, पर ये पूछेंगे माँ मैं पूर्वजन्म में कौन था? अब मैं, एक साहब ने मुझे बहुत तंग किया मैं पूर्वजन्म में कौन था, कौन था? फिर मैंने कहा देखो बेटे मैं तुमको नहीं बता रही हूँ तो इसका मतलब कुछ गड़बड़ी है। क्यों मुझसे पूछ रहे हो? इस जन्म में अच्छा है तुम मेरे साथ हो। क्यों मुझे बार-बार पूछ रहे हो? इस जन्म में अच्छा है तुम मेरे साथ हो। क्यों मुझे बार-2 पूछ रहे हो कि मैं पूर्वजन्म में कौन था। उससे तुम्हारा क्या लाभ होने वाला है। नहीं मुझे अच्छा लगेगा। अच्छा अगर मैंने कहा कि तुम पूर्वजन्म में जयपुर के महाराजा थे, समझ लो, तो तुमको क्या गद्दी मिल जाएगी? वहाँ जाओगे तो वहाँ से भगा देंगे सब। तो पूर्वजन्म की बात क्यों करते हो? क्योंकि मुझे एक ज्योतिषी ने बताया था कि मैं पूर्वजन्म में कहीं का राजा था? मैंने कहा लक्षण तो दिखते नहीं तुम्हारे अंदर राजा होने के। अब तुमको ज्योतिषी ने बताया, तुमसे पैसे ऐंठने के लिए। तुमने राजा जैसे कुछ गले का कंठा वंठा दिया उसको कि बस ऐसे ही पैसों में टाल दिया? उन्होंने कहा कि आप मज़ाक कर रहे हैं। मैंने कहा कि तुम बेवकूफी की बात कर रहे हो तो मैं क्या करूं? यहाँ तुम अपनी पूर्वजन्म पूछने के लिए मेरे पास आए। मैं कोई ज्योतिष शास्त्र तो जानती नहीं हूँ। मुझे इसमें कोई भी, किसी भी तरह की दिलचस्पी नहीं है। तुम ज्योतिष शास्त्री

के पास जाओ और वो तुमसे कहेगा, तुम इंग्लैंड के राजा थे तो दे दो उसको कुछ। इंग्लैंड के राजा वगैरह कुछ नहीं देते वैसे। उधर के लोगों में विश्वास ही नहीं। अब इसी बात को ले कर बैठ गए कि पिछले जन्म में मैं ये था और पिछले जन्म में वो था। **तब महाकाली का स्वरूप अगर दिखाएँ तो सारे ही जन्म भूल जाएँगे! इसकी बहुत जरूरत है। महाकाली के स्वरूप के सिवाय ऐसे पागल छूट नहीं सकते।** अब मैंने देखा कि जो भागे तो फिर आए नहीं। फिर उन्होंने सामना नहीं किया मेरा। अब ये तो बिल्कुल सोचिए कि बहुत छोटी सी बात है। पर उसके अलावा महाकाली की जरूरत है कि जिन लोगों को ये गुरूओं ने भूत लगा दिया है। अब गुरूओं के भूत ऐसे होते हैं कि या तो आप गुरु का कहना मानो और बिल्कुल उनके जैसे हो जाओ। वो कहें तुमसे कि जा कर उनके घर में डाका डालो, तो डाका डालो। उसको मार डालो, तो उसको मार डालो। ये करो, तो वो करो। एकदम गुरु की हाथ में आप शीष नवा करके घूमो तो ठीक है नहीं तो गुरु लग जाएगा आपके पीछे। आपसे कहा किसी को मारो। उसको नहीं मार सके तो दूसरे से कहेगा। इसी को मार डालो। एक अच्छी बात भी है। ऐसे झूठे गुरु एक तरह से अपना और अपने शिष्यों का ही नाश करते रहे लेकिन यहाँ देखती हूँ कि नाश हो रहा है तो भी उन्हीं के चरणों में चले जा रहे हैं! हमारे यहाँ एक साहब पुलिस के साथ आए। मैं शायद अशोका होटल में थी। तो मेरे पति ने कहा, ये क्या झगड़ा है? पुलिस काहे आई? मैंने कहा पता नहीं, देखो तो सही। तो उन्होंने कहा ये महाशय जो हैं, इनका नाम मैं नहीं बताऊँगी, ये डाक्टर साहब हैं और ये भागे हुए हैं आनंदमार्ग से। तो कहने लगे आपको आश्चर्य होगा माँ, ये आनंदमार्ग के बड़े भारी प्रचारक थे। दुनिया भर में घूमे, खूब पैसा कमाया और फिर इनके गुरु जो थे वो इनको अपना आद्य शिष्य मानते थे। तो हुआ क्या? ये कलकत्ते में देवी के मन्दिर में थे। जहाँ बकरा काटा जाता है। ये बात तो सही नहीं। वो बकरा इसलिए काटते हैं देवी के सामने, कि उसके अंदर भूत डाल कर के, और जो भूतग्रस्त हैं उसका भूत इसमें डाल कर के उसको उस भूत से छुटकारा हो। हम लोग तो नींबू पर ही उतार देते हैं। शाकाहारी (Vegetarian) अपना तो सब मामला। क्योंकि बहुत से बनिए आ गए हैं न सहजयोग में। सो नींबू को काट करके निकल जाता है, भाग जाता है। तो ये जो भूतग्रस्त लोग हैं उनके भूतों को महाकाली दिखाई देती है। वही रूप दिखाई देता है और थर-थर-थर-थर काँपते हैं। ऐसे और कोई कहेगा? अब ये क्यों थर-थर काँप रहे हैं? और अनेक तरह के भूत लग जाते हैं और आश्चर्य मुझे लगता है कि अहँ (Ego) का अगर भूत लग गया तो उसको भी महाकाली का रूप दिखाई देता है।

और पूना का किस्सा। पूना में एक प्रोग्राम हो रहा था तो उन्होंने कहा कि माताजी तो ब्राह्मण नहीं हैं, तो हमारे यहाँ पर प्रोग्राम नहीं हो सकता। जो ब्राह्मण होगा वो ही आए। तो वहाँ के जो कार्यकर्त्ता थे उन्होंने कहा, अच्छा ठीक है, हम पेपर में दे देते हैं कि माता जी ब्राह्मण नहीं हैं, यहाँ प्रोग्राम नहीं हो रहा। दूसरी जगह प्रोग्राम

करते हैं। ना-ना, ना-ना ऐसा नहीं करो। ये हमको नहीं दिखाना है, यहीं करते हैं प्रोग्राम। मुझे किसी ने कुछ बताया नहीं तो मैंने कहा अच्छा आप लोग, पता नहीं कैसे ये दिमाग में आया? आप में से जो कोई ब्राह्मण है मेरी ओर हाथ करे दोनो ऐसे, अब उनके लगे हाथ हिलने! अरे माँ बंद करो बंद करो माँ। आप शक्ति हो, छोड़ो। तुम लोग क्यों हिल रहे हो? मैंने तो नहीं कहा, अपने आप ही हिले जा रहे हो! मैंने कहा था तुमसे हिलने को। मुझे क्यों कह रहे हो? तुम्हीं रोको? रुकता ही नहीं, करें क्या? तो मैंने कहा मैंने तो नहीं कहा। पर पता नहीं क्यों बड़ा भय लग रहा है, पता नहीं क्या हो रहा है? अब उनको ये घमण्ड था कि वो बड़े ब्राह्मण हैं। तो कहने लगे माँ उधर भी कुछ ब्राह्मण बैठे हुए हैं उनके भी हाथ हिल रहे हैं। मैंने कहा झूठ, जरा उनसे पूछो वो लोग कौन हैं। ब्राह्मण हैं? अरे नहीं बाबा हम लोग ब्राह्मण नहीं हैं। हम लोग प्रमाणित (Certified) पागल हैं, थाना से आए हैं। वहाँ पर आपकी माताजी के पास जा कर एक पागल ठीक हो गया था। इसलिए हम आए हैं। हम लोग ब्राह्मण नहीं हैं। अब उनके आँखें खुली। मैंने कहा समझ गए आप। वो भी पागल और आप भी पागल। दोनों ही पागल। तब उनके हाथ छूटे। शुरुआत में तो बहुत ज्यादा महाकाली का प्रताप है। कुछ समझ ही में नहीं आता था कि ये महाकाली जी अपना प्रताप कुछ कम करें तो मैं दूसरे भी काम करूँ। पूना में तो ये हाल हो गया कि मेरी एक भतीजी (Neice) है उसे मैंने कहा कि एक हँडिया ले आओ। तो बाज़ार में गई, तो एक रुपये की हँडी 10 रु. में बिक रही, तो उसने कहा कि इतनी महँगी कैसे हो गई? एक रु. की 10 रु. में! उसने कहा कि एक माता जी आई हैं वो हँडिया, हँडियों पे हँडियां, सब बिक गई। ये सब लोग हँडियां लिए चल पड़े।

मैंने कहा पूना में इतने भूत, बाप रे! कुछ समझ में ही नहीं आया। मैंने कहा हँडिया ले के आओ, नींबू ले के आओ तो बैठें। पर वो नहीं लाए, उनकी आँखे लगी घूमने, वो लगे घूमने। मैं तो उठ के चली गई कि तो सारा यहाँ भूतों का जमघट है। जो लोग हँडिया ले के बैठे थे वो तो कुछ ठीक थे पर बाकी के जो थे वो खड़े हो कर के हो हो, हा हा, ही ही करने लगे। तो मैंने कहा कि भई ये गर महाकाली की शक्ति कुछ कम हो जाए तो अच्छी बात है। अब ये एक चीज़ ठीक करने के बाद दूसरे आ गए। माने कौन जिसको आप साइको-सोमैटिक कहते जैसे कैंसर, मस्कुलर, ये वो दुनिया भर की बीमारियाँ जिसको डाक्टर लोग नहीं ठीक कर सकते। अच्छा मानेंगे नहीं, डॉक्टर मानते नहीं जब तक रोगी मर नहीं जाएगा। खींचो पैसे। एक साहब को गुर्दा रोग (Kidney trouble) हो गया तो मैंने कहा मैं आपकी किडनी ठीक कर दूँगी। एक शर्त ये है कि आप अपना धंधा बंद करिये कि जो लोगों को ये जो आप टेबलों पे चढ़ा-चढ़ा के सारा पैसा खींचते हो उससे वो ठीक नहीं होता। मरने से पहले Bankrupt हो जाता है। Dialysis बंद आप करो तो मैं तैयार हूँ। हाँ-हाँ माँ आप मेरी किडनी ठीक कर दो। ठीक कर दी पर दो महीने बाद फिर चालू उनकी दुकान। डाक्टर लोग कब सच बोलते हैं और कब झूठ बोलते

हैं? भगवान जाने। फिर उनको Kidney Trouble हो गई। वो मैंने कहा साहब इस बार क्या हुआ? कहने लगे फिर से Kidney Trouble है। मैंने कहा वो नहीं है अब Cancer चल पड़ा है। अब घबड़ा गए। मैंने कहा मैंने आपसे कहा था। आपने फिर से चालू कर दी अपनी दुकान। अब माँ मैं पेट कैसे भरूँगा? मैंने इतने रुपये की मशीनरी मँगवाई है, ये कर रहा हूँ, वो कर रहा हूँ। मैंने कहा बेच डालो मशीनरी को खत्म करो। सुना है वो अब हैं नहीं महाराज सहजयोग में। तो सारी जितनी left side की बीमारियाँ हैं, जितनी हैं साइको-सोमैटिक Disease जिसका कोई Cure नहीं है वो सब महालक्ष्मी की कृपा से ही ठीक हो सकती है। इसीलिए महालक्ष्मी का ही मंत्र कहना पड़ेगा और महालक्ष्मी को जब तक आप प्रकट नहीं करियेगा ये बीमारियाँ ठीक नहीं हो सकतीं। और इतनी गर्मी इन लोगों से निकलती हैं कि समझ में नहीं आता!

London में जबकि सब लोग हीटर लगाते हैं आप एक कैंसर Patient को ले आइये और उसकी कुण्डलिनी जागृत कर दीजिए। हीटर का खर्चा गया। इतनी गर्मी निकलती है। जिसकी कोई हद नहीं। इधर गर्मी निकलती है उधर वो रोते रहते हैं अक्सर, क्योंकि इसके साथ रोना चलता है। महालक्ष्मी के दर्शन हों तो रोना रुके। माँ सरस्वती के दर्शन तो दूर ही रहे, ये तो माँ काली के ही दर्शन होंगे। अब उनको देखकर रोना ही आएगा। अब उनसे कहें क्या? सूक्ष्म रूप से आप देखिये कि महालक्ष्मी का जो स्वरूप है। अति रौद्रा। देवी के उसमें कहते हैं अतिरौद्रा अतिसौम्या पर महालक्ष्मी अतिरौद्रा। रुद्र स्वरूप और वो रुद्र बहुत जरूरी है नहीं तो ये Negativity भागने वाली नहीं है। ये सिर्फ रुद्र स्वरूप से ही। एकादश रुद्र में जो ।। रुद्र हैं वो ग्यारह ही रुद्र में महाकाली की ही शक्ति विराजमान है। और वो हमारे मेधा पर यहाँ ग्यारह चक्रों में समाई हुई हैं। गर किसी आदमी का एकादश पकड़ गया तो सोच लीजिए उसको तो कैंसर या कोई न कोई left sided भयंकर incurable Disease हो गई है।

सहजयोग का Science जो है वो पूरी तरह से उत्तम है। उसमें कोई आप दोष नहीं निकाल सकते। अब लोग आए कैंसर लेकर, Neurosis, फलाना ढिकाना, पचास तरह के, एड्स, और कहने लगे कि माँ हम तो कभी किसी गुरु के पास गए नहीं। अरे भई गुरु के पास गए नहीं, तुम्हारी माँ गई होगी। तुम्हारे बाप गए होंगे। नहीं वो भी नहीं हुआ। हाँ रजनीश की किताबें पढ़ी थीं और सत्य साई बाबा का फोटो हमारे घर में है। और एक दो देख लो मैंने कहा। दो चार और बीमारियाँ आ जाएंगी। फिर आना। वहाँ जाएँगे। बीमारियाँ पकड़ेंगे और यहाँ आएँगे। तो उन पर तो रुद्र स्वरूप ही देवी का दिखना चाहिए ना। क्या भूतों से कहा जाए कि आ बैठ-बैठ, तू खाना खा, ले पान। बहुत से लोग पूछते हैं कि माँ देवी का रुद्र स्वरूप कैसे हो सकता है? गर वो माँ है तो माँ का स्वरूप रुद्र कैसे हो सकता है? क्यों नहीं। बच्चों को ठीक करने के लिए रुद्र स्वरूप भी धारण किया। सौम्य स्वरूप, ये बच्चों के लिए हानिकर जाना जा सकता हैं

उनका रुद्र स्वरूप बहुत जरूरी है। उसके

सिवाय वो ठीक ही नहीं हो सकते। परन्तु रुद्र स्वरूप में किसी को हानि नहीं पहुँचाई। ये विशेष बात है। जैसे कि पहले महाकाली ने इसको मारा, उसको मारा, इसकी जीभ खींची, ये किया, ऐसा कुछ नहीं। आज का जो महाकाली का स्वरूप है वो है रुद्र। इसकी कोई ज़रूरत ही नहीं, ये सब करने की। मनुष्य ऐसे ही घबड़ा कर के ठीक हो जाता है। उस स्वरूप को देखते ही ठीक हो जाता है और जब वो उस स्वरूप को देखता है अपने आप उसकी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं क्योंकि उसके अंदर जो Negative चीज़ है वो भाग जाती है। तो किसी की गर्दन काटने की या जीभ काटने की या आँख निकालने की कोई ज़रूरत नहीं है। माँ काली का स्वरूप गर इस्तेमाल ही न किया जाए तो सहजयोग का कार्य ही न हो सके क्योंकि Negative forces के कारण सारे चक्र पकड़े जाते हैं और चक्र ठीक किए बगैर कुण्डलिनी चढ़ेगी नहीं। **इसलिए माँ काली का स्वरूप बहुत वंदनीय है, बहुत सराहनीय है जो कि किसी को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाती।** सिर्फ उसके स्वरूप से जो बुरी बातें हैं वो भाग जाती हैं।

अब मियाँ-बीबी के झगड़े ये सबसे बड़ा प्राब्लम है। आजकल क्योंकि बीबियाँ पढ़ गई और मियाँ चाहते हैं कि बीबी बिल्कुल देहाती हो। अब वो देहाती तो है नहीं, उसको देहाती कैसे बनाएँगे? एक बार शहरी हो गए, तो शहरी हो गए। चाहे आप लँहगा पहन लीजिए और चाहे तो आप पैंट पहन लीजिए। दिमाग तो शहरी हो गए। अब जो शहरी दिमाग हो गए तो उसके बाद जो स्त्रीत्व था वो तो कम हो ही जाता है। पुरूषत्व ज़्यादा आ जाता है। स्त्रीत्व कम आ जाता है। और स्त्री का जो सबसे बड़ा गुण है शालीनता वो खत्म हो जाता है।

वो शालीनता जो स्त्री का स्वरूप है उसको रणांगन में जाने की जरूरत नहीं है। पद्मिनी ने अपने को 3000 औरतों के साथ चित्तौड़गढ़ के किले पर ही जला लिया था। वो कोई तलवार लेकर बाहर नहीं गई। पर जब जरूरत पड़ी तो झाँसी की रानी हाथ में तलवार ले कर खड़ी हो गई! तब मुझे याद है अंग्रेज़ ने कहा था कि हमारी तो विजय है लेकिन गौरव तो झाँसी की रानी का है। अपने देश में अनेक तरह की उज्जवल चरित्र वाली औरतें हुई हैं। पति परायण, स्त्री धर्म में अत्यंत उच्च ऐसी औरतें हो गई हैं जिन्होंने अपनी सूझबूझ से अपना घर संभाला। जब गाँधी जी ने ललकारा तो औरतों ने अपनी चूड़ियाँ व सब जेवर निकाल दिए। राणा प्रताप का ही किस्सा है कि राणा प्रताप ने देखा कि उसकी लड़की की घास की बनाई हुई रोटी भी एक बिलाव उठा कर ले गया, तो उनके मन में ये शंका हुई कि मैं क्यों ऐसा कर रहा हूँ, अपने अहंकार के लिए? मैं अकबर की शरण क्यों नहीं जाता? तो वो चिट्ठी लिखने बैठे अकबर को। उस वक्त क्षत्राणी, उनकी पत्नी की शक्ति जागृत हुई। हाथ में भाला ले कर उसने अपनी लड़की पर लगाया और कहा कि मैं तुझे मार डालती हूँ जिससे ये जो कमज़ोरी इनके अंदर आई है। तब राणा प्रताप की आँखें खुली।

हमारे यहाँ औरतों ने गर सोचना ही है तो पिछली बात सोचें कि रणांगन में अपने पतियों

को टीका लगा कर वो लड़ने भेजती थीं।

इन अंग्रेज़ों से कौन लड़े आदमी? पर शक्ति औरतों की है। क्योंकि आजकल औरतें अशक्त हो गईं और आदमी भी निःशक्त हो गए। ये शक्ति जो है ये स्त्री की शालीनता है। और जब तक ये शालीनता क्रियान्वित नहीं होती तो गृहलक्ष्मी की शक्ति उसके अंदर प्रकटित ही नहीं होती। लेकिन चतुर होना चाहिए। गृहलक्ष्मी को चतुर होना चाहिए और दूसरे उसमें सूझबूझ होनी चाहिए। **सो ये कहें कि जब महाकाली शक्ति अत्यंत शांत हो जाती है तो वो गृहलक्ष्मी हो जाती हैं।** महाकाली शक्ति। **तो हम फातिमा बी को मानते हैं कि वो गृहलक्ष्मी का सिंहासन सुशोभित करें।** महाकाली की इस शक्ति से स्त्री अपने बच्चे को ठीक रास्ते पर रखती है। अपने चरित्र को उज्जवल रखती है और हम लोग इस चीज़ के साक्षी हैं कि एक पतिव्रता स्त्री के पतिव्रत को कोई नष्ट नहीं कर सकता क्योंकि ये शक्ति है। ये महाकाली की शक्ति है, लोग डरते हैं एक पतिव्रता स्त्री से। और पतियों को भी जान लेना चाहिए कि उनके अंदर जो कार्य शक्ति है वो भी स्त्री से ही आती है। और वो शक्ति गर स्त्री से आती है तो स्त्री में पहली चीज़ शालीनता है या नहीं। गर स्त्री जबरदस्त है, इधर बैठ, उधर बैठ, ये चल, वो कर, जो ऐसे अँगुली दिखाना शुरू कर दी तो, वो चुप। पति का अधिकार है। लेकिन शालीनता से आप जीत सकते हैं। उसमें चतुरता चाहिए। ये शालीनता के लिए कोई किसी को मार-पीट चिल्लाना, कुछ नहीं। एक तो शालीन स्त्री में हास्यरस बहुत प्रस्फुटित होना चाहिए। किसी भी चीज़ को वो हँसी में टाल दे और हँस कर के हज़ारों प्रश्न को हल कर दे। ये जो बारीकी होती है इसको समझने के लिए मैंने कहा था आप शरद्चन्द्र पढ़िए। उसमें सबकी नोंक-झोंक औरतें कैसे संभालें? ये होशियारी की बातें हैं। हम लोगों को Politics में जाने की ज़रूरत नहीं, और इस गंदे Economics में तो जाने की बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं। लेकिन समाज की सारी धुरी, समाज का सारा कार्य स्त्री पर निर्भर है।

जो स्त्री अपने बच्चों को अच्छा बनाती है, अपने घर को अच्छा बनाती है, अपने पति को स्वास्थ्य देती है वो स्त्री एक बहुत बलिष्ठ समय बनाती है। और कल मैंने कहा भी कि हमारे हिन्दुस्तान की औरतों की वजह से ही आज हमारा समाज ठीक है। पर स्त्री का स्वभाव शालीन होना चाहिए और उनकी शक्ति भी शालीनता में है। उद्यमता में नहीं है। उसको दंड ठोकने की ज़रूरत नहीं है। बिल्कुल नहीं। उसकी जो शालीनता है उस शक्ति पर वो सारी दुनिया को जीत ले। उसकी चाल-ढाल, उसका ढंग एक देवी स्वरूप होना चाहिए। वो महाकाली शक्ति है। वो अनेक चीज़ों में बैठती है। उसके अपने-अपने वाहन हैं लेकिन वो जब हाथी पर बैठती है **तो उसे ललिता गौरी कहते हैं।** कला, हावभाव उसके सब बहुत इज़्ज़तदार सुन्दर होते हैं। **ज़रूरी नहीं कि आप घूंघट लें, ज़रूरी नहीं कि आप सर ढकें, लेकिन आँखों में शालीनता होनी चाहिए। शालीन बहुत बड़ा शब्द है इसमें बहुत सी चीज़ें समाई हुई हैं।** क्योंकि वो रुद्र स्वरूपा हैं उस रुद्र स्वरूपा को बहुत सौम्य स्वरूपा होना है। इसीलिए कहा

है कि आप घूंघट ले लो, सर ढक लो। बुर्का ले लो क्योंकि आप महाकाली हैं। जो आपको देख ले वो ही भस्म हो जाए। जो बुरी निगाह से आपको देखे वो ही खत्म हो जाए। आपके सुरक्षण के लिए नहीं, Protection के लिए नहीं लेकिन जो दूसरे के लिए नहीं लेकिन जो आपके ऊपर बुरी निगाह डाले वो भस्म हो जाए नष्ट हो जाए। वो भस्म हो जाए। ऐसी ही ये महाकाली की महान शक्ति है। देखने में तो बहुत ही उज्जवल बहुत ही शालीन पर अंदर से, उसकी शक्ति तो अंदर से क्रियान्वित होती है। तो महाकाली को लोग कहते हैं कि ये एक बड़ी रुद्र शक्ति है माँ किन्तु इसकी शालीनता आप देखें तो आश्चर्य होता है कि क्या ये महामाया हैं? तो ये महाकाली और इतनी शालीन जैसे नववधु, वाह वाह। ऐसी शर्मायगी, ऐसे मीठे बोल बोलेगी जैसे फूल झड़ रहे हों! ऐसे प्यार करेगी कि विश्वास ही नहीं होता। लेकिन ये महाकाली की शक्ति है। इसको जिसने पा लिया उसको कोई न तो भूत छू सकता है। उसको कौन छुएगा, वो ही भूत को पकड़ेगा। और जो स्त्री ऐसी होती है उसके एक नज़र से वो लोगों को भस्म कर सकती है।

अब दूसरी शक्ति है महासरस्वती की जिससे की हमें बुद्धि में अनेक तरह के कलात्मक और अनेक तरह के विचारक प्रकाश आते हैं। सरस्वती की कृपा से। शारदा...शारदा की कृपा से हमारे अंदर अनेक विचार बड़े सुन्दर, बड़े शांत, बहुत शीतल, बहुत कविताएँ आती हैं पर रोने गाने वाली नहीं, ऐसी आती हैं कि जिससे आप जागरूक हों। बड़े-बड़े राष्ट्रीय गीत लिखे गए। देश के बारे में न जाने लोगों ने क्या-क्या लिखा? अब वो सब कविताएँ चली गई और ये सब गंदे फिल्मी गाने बजते रहते हैं। और गणेश जी के सामने क्योंकि सुबुद्धि ही नहीं है मुनष्य में। सुबुद्धि नहीं है। वो बेकार के काम करते रहता है। बुद्धि से कुछ भी निकाल ले! इसमें सबसे बढ़ कर गर कोई है तो मैं कहूँगी ये फ्रायड। इससे बढ़ कर कोई औलिया मैंने देखा नहीं। निस्संकोच उन्होंने अपने विचार सबके सामने रख दिए और सबने उसे मान लिया। अब मैं यहाँ नहीं आपको बताऊँगी क्योंकि यहाँ बताने लायक हैं नहीं उसके गंदे-गंदे विचार। वो तो अच्छा है हिन्दुस्तान में नहीं आए नहीं तो सब उसको काट कर फेंक देते। और उस आदमी का लिखा, एक line आप पढ़िए तो आप जान जायेंगे कि ये बड़ा ही बेशर्म आदमी है या भूत है या राक्षस है। जो भी है, ये उसने अपनी लेखनी का और बुद्धि का उपयोग किया है।

शारदा के विरोध में सब लिखा और लिख दिया उन्होंने। अब सब जगह शुरु हो गई कि हममें तो साहब भक्ति है। हम चाहे जो लिखें। आजकल के अखबार वाले भी वैसे ही हैं। उनके भी ऊट पटाँग जो समझ में आती है बात वो लिखते रहते हैं, और कोई अच्छी बात तो लिखना ही नहीं जानते। कौन मर गया, कितने मर गए? अभी मर रहा है, वो रोज़ देंगे। मर रहा है तो भई मर जाने दो फिर लिखो। भई काहे को रोज़-रोज़ सबको सताते हो। वो मरता ही नहीं है, रोज़ इतना सारा लिख देंगे। मरा नहीं, अभी मरता नहीं। एक बार मरने के बाद इत्मीनान से लिखो। मरने तो वाले हैं ही। अब क्यों रोज़-रोज़ ये सब

बातें। किसने पूछा है आपसे? फिर लिखेंगे, महाझूठ बोलते हैं ये लोग। डर नहीं उन्हें शारदा देवी का। शारदा देवी तो हैं सत्य को देने वाली और सत्य की अधिष्ठात्री हैं। जो अपने सर में सत्य का प्रकाश आता है वो शारदा का ही है। आप जब लिखते हैं तो आप सोच नहीं रहे कि आपके अंदर ये लेखन शक्ति कहाँ से आई। ये किसने आपको लेखन शक्ति दी है? शारदा देवी ने या किसी भूतनी ने आपको दी है? इसी प्रकार मैंने देखा है। बहुतों ने ऊट-पटाँग कुण्डलिनी के बारे में बातें लिखी हैं। एक अरबिन्दो साहब हैं, वो तो बस पता नहीं कहाँ से कहाँ, कहाँ से कहाँ, कहाँ से कहाँ चले गए! कुछ उसमें अर्थ ही नहीं है, वो क्या लिखते हैं पता नहीं। उनका बड़ा नाम है अरबिन्दो मार्ग। मैं हमेशा उस मार्ग से नहीं जाती क्योंकि पता नहीं कहाँ चला जाए? जहाँ उसकी खोपड़ी गई वही लिखता गया, लिखता गया, लिखता गया। और कुछ भी उसमें की बात सत्य नहीं। अब वो सावित्री की गाथा गाई उन्होंने, अब सावित्री का ये अरे क्या करने का है। और उनकी वो जो भी उनका रिश्ता रहा हो, पता नहीं वो जो माता जी थीं वो पचासों तो उनके मुँह पर शिकनें पड़ी हुई हैं और कहें ये जवान होने वाली है। वो मर गईं, गाड़ दिया तो भी अभी जवान तो हुई नहीं। और उनकी किताबों पे किताबें। ऊट-पटाँग ऐसे। ऐसे धर्म के न जाने कितने लोग हैं। फिर आज के intellectuals निकल आए हैं दूसरे हाल में। मैंने पढ़ा एक साहब हैं अपने को बड़े भारी लेखक समझते हैं। नाम मैं भूल गई। पंजाबी हैं पंजाबी। कभी उन्होंने संस्कृत पढ़ा नहीं होगा और लिखते क्या है कि कृष्ण जो थे ये शूद्र धर्म के थे या अशूद्र थे, काले थे और राम जो थे वो ब्राह्मण धर्म के थे। अरे मैंने कहा काहे.....और इसलिए इनको शूद्र मानते हैं और उनको ब्राह्मण मानते हैं। मैंने कहा अच्छा! ये कौन से शास्त्र में से आपने पढ़ा? सच बात तो बताऊँ कि जवाहर लाल जी ने भी जो किताब लिखी है वो Discovery किसी और चीज की होगी। India की Discovery नहीं।

इतनी superficial इतनी ओछी किताब! ये हिन्दुस्तान की बात लिख रहे हैं। कोई गहराई नहीं उनमें। जो देखो वो किसी पे भी लिखना शुरू कर देता है! अभी तक मैंने कुछ नहीं लिखा।

मैं सोचती हूँ सबकी खोपड़ी में जाए ऐसी बात लिखो। अभी तो सबकी खोपड़ियाँ इतनी खुली नहीं हैं। और किसी ने भी नहीं लिखा। हाँ मोहम्मद साहब ने तो कुछ भी नहीं लिखा। उनको तो लिखना ही पढ़ना नहीं आता था बेचारों को। चालीस आदमियों से उन्होंने बताया कि भई ये मुझको मालूम हुआ। Revelation हुआ ये ऐसे-ऐसे हैं। उनको भी लिखना पढ़ना नहीं आता था। तो चालीस साल तक कुछ लिखा नहीं गया। एक बड़ा दुष्ट आदमी था। उसका नाम था...कुछ ऐसा ही नाम था। ये मेरे पिता ने मुझे बात बताई और अब ये पक्का है ये पता है ये सच है। उस महाशय ने बड़ा दुष्ट था। हजरत अली को मारा उसके लड़के को मारा। उसके बाद खलीफा को मारा फिर दूसरे खलीफा को मारा और उसका जिगर उसकी माँ खा गई। ऐसा ये गंदा आदमी। औरतों का वो.....था। उसने कुरान को Edit

किया। अब बताईये और कुरान-कुरान लिए घूमते हैं! इसकी authenticity कुछ है नहीं और बाईबल में भी Paul ने सारा सत्यानाश कर दिया। ये तो ईसाई कम से कम मानते हैं। वो नाम भर के ईसाई हैं। चलो अच्छा है क्योंकि ऐसी-ऐसी बातें किसी से कहो तो मारने को दौड़ेंगे। जिस कुरान के लिए लड़ते हैं उसका ये इतिहास है, ये सच्ची बात है। उसमें शारदा देवी का क्या हाथ? शारदा देवी की कृपा से बहुतों ने बहुत कुछ लिखा। ज्ञानेश्वर जी ने ज्ञानेश्वरी लिखी और उसके बाद एक और किताब। इतनी सुन्दर है कि ऐसा लगता है कि आप अमृत पी रहे हैं। संतों ने लिखा जिन पर शारदा देवी की कृपा हुई। ज्ञानेश्वरी की शुरूआत में शारदा देवी की कृपा से वो लिखते हैं कि मेरे वचन जो भी मैं कह रहा हूँ ये मैं शारदा देवी को प्रसन्न करने के लिए कह रहा हूँ लेकिन ये शब्द किसी भी तरह से आपको दु:ख नहीं पहुँचाएंगे। जिस तरह से पंखुड़ियाँ धीरे से आ कर जमीन पर गिर जाती हैं उसी तरह मेरे शब्द भी आपके हृदय पर गिरें और आपको सुगन्धित करें। क्या लिखना। इतनी सुन्दर कविता और इतना सौम्य उसका स्वरूप! ऐसे लगता है कि जैसे आप अमृत का रस पी रहे हों! अब इसलिए कि मैं मराठी भाषा जानती हूँ, पर अंग्रेजी में भी कई बड़े कवि हो गए और उनकी कविताएँ हम लोगों ने विज़न नाम की किताब में दी हुई हैं आप पढ़िए। उनका नाम था विलियम ब्लेक। और इतनी जोशीली कविता कि आप के अंदर जोश आ जाए। शारदा जैसे उनकी कविताओं में से निकल कर आपके अंदर बस गई हों। वैसे ही शरद्-चन्द्र, गर आप पढ़िए तो आप कहानी लिखना शुरू कर देंगे। ऐसे-ऐसे लेखक अपने यहाँ हो गए इस भारत वर्ष में कि ऐसे कहीं नहीं हुए होंगे। टालस्टाय हो गए बहुत बड़े, मैं मानती हूँ पर उनसे भी बढ़ कर शरतचन्द्र। महाराष्ट्र में तो बहुत ही ज़्यादा। एक... उनके नाम बताने से फायदा नहीं। लेकिन किसी ने उनको translate ही नहीं किया क्योंकि ये सब मामला Political है भई। ये Political क्या है। शारदा देवी कोई Political हैं। ये Political मामला है कि आपके Chief Minister साहब गर कहें तो Academy बनेगी।

हमारे Chief Minister साहब महाराष्ट्र के, वो तो अंग्रेजी भी बोलना नहीं जानते, मराठी भी नहीं जानते वो क्या करेंगे? अनपढ़ आदमी जैसे हैं। सब अनपढ़ ही होते हैं आजकल तो Chief Minister? वो क्या recommend करेंगे? उनको क्या मालूम? Recommend करने के लिए कोई पढ़ा लिखा आदमी हो। उनको कोई जानने वाला हो, बना दिया recommend करने के लिए। हरेक चीज़ को वो ही recommend करते हैं। नहीं तो ऐसी-ऐसी सुन्दर चीज़ें।

दक्षिण में कोई उत्तर के एक कवि हैं। उनकी कविताएँ इतनी सुन्दर कि मैं आपसे क्या बताऊँ। शारदा देवी की अत्यंत कृपा अपने देश पर है। सबसे बढ़िया लेखक अपने देश में हैं। ये westernised नहीं बल्कि असली हिन्दुस्तानी भारतीय लोग हैं। उनमें पैसा नहीं है पर सरस्वती की बड़ी कृपा है। एक से एक। अब राजस्थान पर उस की बड़ी कृपा रही। यहाँ बड़े-बड़े कवि हो गए और यहाँ से Alexander भी यहाँ की

संस्कृति देख कर इतने अचंभे में पड़ गए! तो वापस गए और अपने साथ चंद्रवर्दाई को ले गए। एक बड़े भारी कवि हैं चंद्रवर्दाई। यहाँ के हैं राजस्थान के हैं। उनको अपने साथ ले गए और राजस्थानी language में उनका बड़ा वर्णन किया। फिर सूफियों में खुसरो हैं, क्या कविताएं हैं! कबीर दास हैं। गुरु नानक साहब का तो कहना ही क्या, वो तो गुरु हैं। रामदास स्वामी। बंगाल में भी क्या एक से एक कवि हो गए। और ये सब शारदा देवी की कृपा से है। सारे शब्दों से मानो धर्म बहता हो। प्रकाश और सारे ही शब्द इनके व्यवस्थित। ऐसा लगता है मानो निर्विचारिता में लिखे गए हों। इतने शुद्ध वर्णन। ये हम जरूर कहेंगे कि सबसे ज़्यादा संस्कृत में और उसके बाद मराठी में ही आध्यात्म पे किताबें बढ़िया लिखीं। ना जाने बड़ी गहराई से, आध्यात्म पे काम किया गया। अब कोई कहे कि अंग्रेजी में भी इतना लिखा जाता है माँ तो वहाँ क्या शारदा का कोई वो नहीं? अब यही सोचिए कि अंग्रेजी भाषा में आत्मा के लिए spirit शब्द है, है ना? शराब को भी spirit और भूत को भी spirit। ये कोई भाषा हुई? ये शारदा देवी की कृपा से ऐसी भाषा नहीं। और फ्रेंच भाषा तो उससे भी गई बीती। एक दम। उसमें चेतना के लिए कोई शब्द नहीं। अंग्रेजी में कम से कम awareness, उसमें awareness के लिए कोई शब्द नहीं। और उसमें आत्मा के लिए जितने दारू के लिए शब्द हैं वो लगा दीजिए आत्मा के साथ।

ये सब उन पर आशीर्वाद हुआ। वे बड़े-बड़े लेखक हो गए, सब जो भी लेखक वहाँ हुए हैं राजकारणी लोग, राजकरण पर लिख गए। हाँ एक विलियम ब्लेक की हम बात कहेंगे वो भी इसलिए। लेकिन बाकी। एक साहब हैं उन्होंने कविता लिखी। मार रोने की कविता। जैसे अपने यहाँ गज़लें होती हैं वैसे रोने की कविता उन्होंने लिखी। कि अच्छे भले घर में बैठे खाते-पीते आदमी हैं पर नाटक बना कर कविता लिखी कि मैं कहीं पे जा कर कैद हो गया। क्यों हुए, कुछ नहीं होते तो पता चलता और कैद में ये हुआ और मेरे बाल सफेद इसलिए नहीं हुए और फलाना नहीं हुआ और ढिकाना नहीं हुआ। ऐसे-ऐसे अरे भाई ऐसा अगर तुम्हें तकलीफ हो रही थी तो तुम कहीं वहीं डूब जाते। अच्छा रहता। ऐसी रोने वाली कविता! जो कविता उठाओ वो रोने वाली। और अच्छे भले बैठे हैं। मतलब उनको कोई तकलीफ होने पर लिखो तो भी समझ में आता है। अच्छे भले बैठे हैं पैसा कमा रहे हैं। सबको रुला रहे हैं और आप पैसा खा रहे हैं। और लोगों को भी रोना बड़ा अच्छा लगता है! हमारे एक मुसलमान पहचान में, तो कहने लगे माताजी ये गज़ल लोग क्यों गाते हैं? मैंने कहा उन्हीं से पूछो जो गाते हैं। मुझे तो पसंद नहीं। कहने लगे जितने लोग गज़ल पसंद करते हैं वो अपनी बीबी से प्यार नहीं करते, वो कुछ और ही से प्यार करते हैं। मैंने कहा आपने कैसे जाना? मैंने देखा है ये बात है और रोते रहते हैं। अरे अपनी बीबी है क्यों रो रहे हैं, ये बीबी बैठी जिन्दा। उसी के साथ रहो, आराम से मजा उठाओ। अब तीसरे के लिए रो रहे हैं। तू नहीं मिला और तेरी छाया नहीं मिली। ये क्या शारदा देवी के आशीर्वाद में से होती है ऐसी कविताएँ? ये सिर्फ लोगों को मूर्ख बनाने के लिए एक और

तरह के लोग होते हैं। एक साहब हमारे यहाँ आए थे। बहुत दिन पहले की बात है तो उन्होंने शराब पे कुछ सुना दिया। बड़े मशहूर आदमी हैं। शराब से ये होता है, फिर मधुशाला होता है और फलाना होता है। मैंने कहा जो रस्ते में मरते हैं वो भी तो कहो। मैंने फिर उनको एक कविता सुनाई उसी वक्त, मैं तो शीघ्र-कवि हूँ। मैंने कहा क्यों ना प्याला झूमता है, पी वही मदहोश हाला। प्याला क्यों नहीं झूमता, वो क्यों नहीं झूमता? और तुम क्यों झूमते हो। तुम तो प्याले से भी कमजोर हो। इसके बाद उन्होंने शराब की बात नहीं करी। कुछ समझ ही में नहीं आता। जब बीबी मर गई तो उसका सुनाया उन्होंने। उस पर एक कविता बना ली और सुनते हैं कि 15 दिन बाद उन्होंने शादी भी कर ली और फिर उस पर दूसरी कविता बना ली। जैसा मौका लग गया वैसे ही। इस प्रकार अपने देश में बहुत सस्ते टाईप के कवि पैदा हुए और विशेषकर वो कवि जो कि भगवान को सब चीज़ में घसीटते हैं और परमात्मा को मनुष्य के जैसा दिखाते हैं। ये तो महापाप है और उन पर शारदा देवी की जो भी कृपा है वह महाकाली के दरवाज़े में जाने वाली है। माने विद्यापति साहब एक लेखक थे। अब राधा और कृष्ण का पता नहीं साहब क्या श्रृंगार सजा रहे हैं। अरे उस कृष्ण को कहाँ टाइम। उस राधा को कहाँ टाइम कि श्रृंगार करें? सारे विश्व की जिसको चिन्ता और रा-धा रा माने Energy और धा माने धारने वाली। उसको क्या ये सब दुनिया भर का रोमाँस करने की जरूरत? अब डाल दिया उन पर रोमाँस। यहाँ तक कि वाजिद अली साहब जिनके 165 बीवियाँ थीं वो भी साड़ी पहन के और राधा बनते थे और कृष्ण के साथ नाचते थे। अब ये रोमाँटिकपना जो है, उसमें कोई अर्थ नहीं, बेकार की बात है। साधू संतों को इससे क्या मतलब? वो तो कबीर को भी लोग कहते हैं कि कबीर ने कह दिया कि "सैंया निकस गए मैं न लड़ी थी" अरे वाह, सैंया निकस गए माने क्या कि प्राण निकल गए, खुसरो ने लिखा "छाप, तिलक सब दीन्हीं, तो से नैना मिला के" अरे सूफी आदमी वो किससे नैना मिलाना सिवाय परमात्मा के? छाप माने मुसलमानों की पहचान और तिलक माने हिन्दुओं की, सब मैंने छोड़ दिया, तुझसे जब मैंने आँखें मिलाई। उन्होंने देहाती भाषा में, इस तरह की भाषा में लिखा। ऐसे जैसे "मेरा नैहर छूटो ही जाए", अब तो क्या वो बहुरानी थे के क्या नैहर छोड़ने के। क्योंकि गहराई नहीं है तो सूफियों को भी हम सोचते हैं कि वो Film Star हैं, फिल्मी गाने गा रहे हैं। गहराई नहीं है ना, समझ नहीं। तो शारदा जी भी जो हैं, वो भी कभी-कभी महामाया स्वरूप हो जाती हैं। जैसे zen, zen के जो कवि लिखते हैं वो एक सहजयोगी ही समझ सकता है और कोई नहीं समझ सकता। वो जिस तरह से कोई चीज़ का वर्णन करते हैं। छोटी सी भी, या जिस तरह के वो चित्र बनाते हैं वह बहुत ही सूक्ष्म और उसकी संवेदना सिर्फ एक योगी जन ही कर सकते हैं और कोई नहीं। अब कव्वाली में लोग मुजरा गाते हैं और मुजरे में कव्वाली। ये कोई शारदा देवी का आशीर्वाद नहीं। किसी भी तरह ऐसे Mixtures करना।

संगीत में भी शुद्धता आनी चाहिए। अब संगीत में भी देखते हैं कि उसमें जापानी भी ले

आते हैं और अंग्रेज़ी भी ले आते हैं और सब ले आते हैं, क्योंकि शुद्ध संगीत गाना नहीं आता। और मिला-मिला के, मिलाकर करते चलो। देहात में गाते हैं लोग कितने प्रेम से और शारदा देवी के पूर्ण आशीर्वाद से! उनके आशीर्वाद से ही जितने महान ग्रंथ हैं वो बने। कितने महान नाटक या कादम्बरियाँ लिखीं गईं वो सब इस शारदा देवी के आशीर्वाद से। किन्तु इस वर्तमान में ऐसा लगता है कि शारदा देवी ने अपना हाथ कुछ रोक लिया है या ये आशीर्वाद कम हो गया है। इस राजस्थान में जो कला का प्रार्दुभाव हुआ है, मैं देखती हूँ कि दो-तीन साल में ही एकदम कला फूट पड़ी है। ये बिल्कुल शारदा देवी का ही आशीर्वाद है इसमें कोई शक नहीं।

ऐसी-ऐसी नक्काशियाँ। ऐसी-ऐसी चीज़ें बनाने लग गए लोग हाथ से अपने! बड़ा आश्चर्य! पहले भी यहाँ बड़ी अच्छी नक्काशियाँ होती थीं, लोग तराशते थे, पर अब सारे Pottery में देख लीजिए, कहीं देख लीजिए। क्या सुन्दर-सुन्दर कला! बढ़िया ऐसे रंग-बिरंगी ऐसी चीज़ें! हम कल ही एक फैक्टरी देखने गए थे तो हमने सोचा आज ये साड़ी पहनें। ये राजस्थानी रंग हैं सारे। और डरते नहीं। ऐसा रंग हर एक तरह का रंग पहनते हैं। अंग्रेज़ ऐसे नहीं। वो कहते हैं एक गर हो तो उसके ऊपर बिल्कुल मेल नहीं ना उनके हृदय में और दिमाग में, लगता है, दिमाग में उनके मेल नहीं।

इनको भाषा की समझ तो है नहीं, कुछ भी कह लो। अब जब हृदय और दिमाग एक होगा तब लोग समझेंगे ये चीज़ क्या है कि जिसे अंग्रेज़ी में यूँ बदल सकते हैं। मारे खुशी के जो रंग समाया ये रंग बनके जब फैल जाता है। ये अपने देश में ही होली हो सकती है और किसी में नहीं।

रंगों के हमारे यहाँ जो खेल होता है, रंगों के हमारे यहाँ जो साड़ियाँ बनती हैं, कपड़े बनते हैं, लँहगे बनते हैं, ये सब उनके देश में कहाँ? वहाँ तो Grey कपड़े पहन कर चलेंगे। अब Grey से बढ़ गए तो काले। ऐसे भूत के जैसी शक्लें और ऊपर से काले कपड़े पहन कर घूमते हैं। एक से उतरे तो दूसरे।

उनकी कोई हिम्मत है ऐसी एक भी साड़ी बना कर दिखा दें तो हम फिर से अंग्रेज़ों को मान लें। एक, रंग-बिरंगे हर तरह औरतों के Dress होते हैं। इस राजस्थान में तो क्या कहें? इतना सुन्दर शारदा देवी ने इन लोगों को यहाँ बसाया है। वैसे एक बात ज़रूर कहेंगे कि यहाँ सफाई का ख्याल बहुत है। औरतें बहुत साफ हैं। घर वगैरह साफ रखती हैं। पर बाहर बहुत गंद है। आदमी लोगों को कोई मतलब ही नहीं बाहर से। सब कूड़ा बाहर फिंकता है और, परदेस में बाहर साफ है क्योंकि आदमी लोग खुद साफ करते हैं। यहाँ आदमी लोग हाथ में झाड़ू लेकर साफ करेंगे। अरे बाप रे, उनके तो सर का ताज उतर जाएगा। तो सफाई और व्यवस्थितता, ये भी शारदा देवी का ही आशीर्वाद है। औरतें तो अपना घर वगैरह बहुत सुन्दर साफ सजा के रखती है। देखते हैं हम पर आँगन से बाहर हुए कि आदमियों के सब वहाँ वहाँ सब नज़र आते हैं। गर ऐसी प्रथा हम सीख लें अंग्रेज़ों से कि वो सब आदमी मिल करके सन्डे के रोज़ उसका जलसा मनाते हैं। सब लोग आपस में बाहर

निकल कर और सब लोग मिलकर जलसा करें, चलो आज सफाई करेंगे, गार्डन ठीक करेंगे। ये करेंगे, वो करेंगे। पर हमारे यहाँ नौकर चाकर हैं। हम क्यों करें। नौकरों से करवाएँ। ये गंदगी जो है ये शारदा देवी को पास में नहीं आने देती है। वो हट ही गई। बहुत जरूरी है कि सफाई करनी चाहिए और सफाई भी सुचारू रूप से Artistic होनी चाहिए। यहाँ तो बहुत ही कला का प्रार्दुभाव है। और ये कोई सोच भी नहीं सकता और ऐसी चीज़ कहीं और बन ही नहीं सकती, जो आपने बना कर रख दी। असंभव लेकिन है। कला है आपके पास। सब कुछ है पर इसे मंडप तक पूजा तक और उसके बाद। तो सीमा में आप बाँध नहीं सकते शारदा देवी को। वो असीम है। और उनकी कृपा असीम तक चलती है। आप कहें कि बस हम शारदा देवी के पुजारी हैं तो आपके घर तक तो ऐसी बात नहीं। वैसे बहुत ही कला पूर्ण यहाँ के लोग हैं। बहुत सुन्दर। इतने सुन्दर घर आपको मेरे ख्याल से हिन्दुस्तान में कहीं नहीं मिलेंगे। उसका कारण है यहाँ की पृथ्वी से ये बढ़िया पत्थर निकले। ये एक से एक और उसका आपने इस्तेमाल किया और पत्थर हैं और इसके अलावा और भी यहाँ बड़ी कलात्मक चीजें हैं। इतनी कलात्मक चीजें इस धरती ने आपको दीं। ये भी शारदा जी की ही कृपा से कि आपके अंदर ये शक्ति आई कि इन पत्थरों को आप तराशें और उसका सदुपयोग करें। जैसे कि टर्की में बड़ी गरीबी आ गई और बड़े कलात्मक लोग। कुछ मेरी अक्ल में नहीं आया कि इतने कलात्मक लोग हैं और इनमें इतनी गरीबी क्यों आ गई? आखिर क्या बात है? पता हुआ कि वहाँ जर्मन लोगों से बड़े impressed हैं क्योंकि टर्की से बहुत से लोग जर्मनी गए थे। इसलिए जर्मन लोगों को बहुत मानते हैं और ये कहूँगी कि आप लोगों के यहाँ खाना है बहुत बढ़िया, ज़रा भारी है पर अच्छा है, बहुत स्वाद, बढ़िया है। पर गर आप टर्किश खाना खाएँगे तो आप कहेंगे माँ ये तो खाने की बिल्कुल चरम सीमा है। और एक साथ एक होटल में हम गए थे 5000 आदमी एक साथ खाना खा रहे थे और गरम-गरम ऐसी फूली हुई रोटियाँ कि पूछिए नहीं। मुझे ज़रा खाने की वैसे इतनी ज्यादा अक्ल नहीं है पर मेरा वर्णन करना कोई विशेष ना होगा पर अगर कोई टर्की जा कर कोई खाना खाए तो वाह-वाह ऐसा तो हमने कभी खाना खाया ही नहीं। बहरहाल जो भी हो इतना अच्छा वहाँ खाना मिलता है कि परदेस से वहाँ लोग आ करके खाना खाते हैं। पर आपको हैरानी होगी कि ये टर्किश लोग जर्मनी से खाना मँगा कर खाते हैं। और कपड़े सिलते हैं वहाँ जर्मन भेजते हैं, कपड़े वो वहाँ सिले जाते हैं टर्की में, फिर वापस जाते हैं जर्मनी में फिर वहाँ से import होते हैं। ये अपने यहाँ भी हैं काफी ये बीमारी कि imported चीज़, ये हम imported लाए। Import करने का जैसा इस देश में कुछ भी नहीं। एकदम रद्दी लोग। क्या बनाते हैं वहाँ अच्छा घड़ी, घड़ी बनाते हैं; ये तो गुलामी की चीज़ है बेकार है। अपने देश में जो चीजें बनती हैं उसका क्या कहना। उनके यहाँ जो Pottery बनती है टर्की में, आपको दुनिया में ऐसी Pottery नहीं मिलेगी। China से भी better, लेकिन उनके Dinner set में खाना खाते हैं तो

आप गरीब नहीं होएंगे तो क्या होएंगे? और कहेंगे हम बहुत गरीब हो गए। तो जाओ और अब जर्मनी में जा कर भीख माँगो, वो अच्छा रहेगा। तो शारदा देवी की जिस देश में इतनी कृपा है तो उनको क्या ज़रूरत है परदेसी चीज़ों को इस्तेमाल करने की? उनके ना तो संस्कृति में कुछ है, न तो उनके कपड़ों में कुछ है और नही उनके खाने पीने में कुछ है। सब बासी खाना खाते हैं सुबह से शाम तक। ताज़ी सब्जी वहाँ मिलती नहीं। अब काँटे चम्मच से खाए बगैर आजकल लोग सोचते हैं कि आप देहाती हो गए! अब बाहर के सहजयोगी हाथ से खाते हैं और अपने Indian सहजयोगी जो हैं काँटे चम्मच से खाते हैं। यहाँ तक इस कदर हम अंग्रेज़ होने की कोशिश करते हैं कि गणपति पुले में बड़े मुश्किल से इंडियन्स के लिए और Foreigners के लिए अलग-अलग Bathrooms बनाए। Indians के Indians ढंग के और Foreigners के Foreigners ढंग के। तो Indians ने कहा हमें तो वैसे ही अंग्रेज़ी के ढंग के चाहिए माँ। अंग्रेज़ी ढंग के आपको चाहिए। और Foreigners बहुत खुश हुए कि हिन्दुस्तानी ढंग के हमारे लिए। Very clean Mother, very celan। वो बहुत खुश हुए। लेकिन हिन्दुस्तानियों को तो attached चाहिए। पहले जाते थे जंगलो में और अब attached! इतनी अंग्रेज़ीयत हमारे अंदर आ गई। बहरहाल उसमें भी हर्ज नहीं। तो बेचारे वहाँ के leader साहब आए कि माँ मैं क्या करूं? मैंने तो अंग्रेज़ों के लिए वो बनाए, उनको वो पसंद नहीं और हिन्दुस्तानियों के लिए जो बनाए उनको वो पसंद नहीं। मैंने कहा अंग्रेजों की जगह हिन्दुस्तानियों को रख दो और हिन्दुस्तानियों की जगह अंग्रेज़ों को। Solution तो निकल आया लेकिन मेरे दिमाग में ये बात आई कि ये अच्छी बात नहीं। जो जंगलों में जाते थे वो बड़े अच्छे थे। ये एहदीपना का लक्षण है। हाँ बुड्ढे लोग हों मेरी समझ में आती है लेकिन जवान लोगों को एहदीपना की कहाँ से बात चढ़ती है। क्योंकि वो विदेशी चीज़ है इसलिए बहुत ज्यादा Smart है। कम से कम औरतों में कुछ अक्ल आ गई है। पहले मैं नायलोन की साड़ियाँ हमारे घर वालों के लिए लाती थी तो बहुत खुश होते थे, उन्होंने कहा माँ हम तो अपने यहाँ की साड़ियां ही पहनते हैं, ये हमें नहीं पसंद। अब वहाँ कोई सिल्की साड़ियाँ हुई? वहाँ से तो लाएँगे तो नायलोन की साड़ियाँ ही लाएँगे। मत लाओ साड़ियाँ हमको नहीं चाहिए। वो मेरे घर वाले। लेकिन बाकी लोगों में ऐसा नहीं। एक देवी से हमने कहा कि वहाँ तो नायलोन ही है, मैं तो शिफान पहनती हूँ सिर्फ शिफॉन। अच्छा ये मोटी है और मैं शिफॉन पहनती हूँ। मैंने कहा कितने गज़ लगते हैं आपको? और इस कदर हम लोगों में जो पहले की औरत की शालीनता थी वो पैसे वो बचाती थी रोकती थी और उन औरतों का हाल ये है कि वो आदमियों से भी ज्यादा खर्च करती हैं। Hair dressers के पास जाओ। नाखून कटवाने हैं पता नहीं क्या-क्या? अमेरिका में एक आर्टिकल निकला था बहुत अच्छा कि आजकल इसलिए Divorse हो रहे हैं, क्योंकि Hair dresser आ गए हैं। कुछ मुझे संबंध समझ में नहीं आया। कहने लगे ऐसे आदमी किसी एक औरत पर गर फिदा हो जाएँ

तो वो उनके Hair-dress से। अब दूसरे दिन उनका Hair dresser बदल गया उनका भी मन हट गया। अब रोज़ ही गर आप Hair-dress बदलते फिरिए और उतने आप पति करिए, उतनी आप पत्नियाँ करिये तो बड़े आश्चर्य की बात है। उनके पागलपन सीखने की अपने को ज़रूरत नहीं। कम से कम हिन्दुस्तान में औरतों ने अपना तरीका छोड़ा नहीं। जिस तरह से वो चलती हैं, घूमती हैं, अपने को वो समझती हैं। जिस दिन औरत ने अपनी शालीनता छोड़ दी उसी दिन उस के अंदर से जितना कुछ शुद्ध कला का स्वरूप कहिए, या स्त्री का स्वरूप, पत्नि का स्वरूप, माता का स्वरूप सब खत्म हो जाएगा। ये शारदा देवी की कृपा में रहने वाले सब लोगों को पता होना चाहिए। एक कहावत है।

"Art is in hiding the art"

कि आप जो भी कुछ करते हैं उसको दिखावे की ज़रूरत नहीं और उसमें Show बाज़ी की ज़रूरत नहीं। किन्तु आप जो कुछ भी करते हैं, पहनते हैं, ओढ़ते हैं गर आपको शारदा देवी की पूर्ण मेहरबानी चाहिए तो दूसरों के लिए करिए, अपने लिए नहीं। दूसरे क्या कर रहे हैं। तो लोग कहेंगे कि हाँ एक Actress बन कर घूमेंगे, सब लोग हमें देखेंगे, और क्या। बहुत Popular हो जाएँगे। नहीं! मैंने देखा है जितनी भी Actress लोग हैं उनका नाम ऐसे लोग लेते हैं जैसे कोई रास्ते पे खड़ी औरत हो। उसकी कोई इज्ज़त नहीं। नुमाइश की चीज़ है। सारी चीज़ में भी शारदा जी का एक आवरण होना चाहिए। संगीत, आपको मालूम होना चाहिए। चाहे देहात का ही हो। ऐसे भी लोग मैंने देखे हैं कि जो औरंगजेब से भी बढ़ कर हैं। संगीत वे जानते नहीं लेकिन बोलेंगे बहुत। एक साहब बड़े अपने को संगीतकार समझ कर बैठे।

मैंने कहा, हैं कौन महाराज? बोले इनका बड़ा भारी Association है संगीत पर मैंने कहा अच्छा। तो कहते अभी इन्होंने गाना गाया था और बाजा भी बजा रहे थे। वाह-वाह, तो इनसे ये कहिए कि दरबारी गाए। तो दरबारी तो गा चुके भाई। अभी दरबारी गा चुके। तो अब क्या दरबारी गाएँ। तो तानड़ा गाएँ। दरबारी, कानड़ा एक ही बात।

हर प्रोग्राम में हाज़िर, हर जगह अध्यक्ष। Musician से पहले उनको ही हार पहनाया जाता। मैंने कहा ये बहरा है कि क्या है। ये दरबारी गा रहा था या क्या। तो फिर आप इस दौर में आए क्यों। ठीक है आप संगीत के लिए नहीं आए। फिर इसमें क्यों आए। हर चीज़ में मास्टरी।

एक देवी जी थीं। वो तो पता नहीं क्या थी अपनी Govt. में। उनके बाल पक गए और वो कला वला कुछ नहीं जानती थीं। कला की सूक्ष्मता कुछ नहीं जानती थी और बड़ा नाम था! तो गर आपको शारदा देवी के शरण में रहना है तो अपने गाँव में, अपने देश में, जो कुछ होता है और जो कुछ आज तक उन्होंने बनाया है, कलाकारों ने उसका इज्जत करनी चाहिए। अजंता नहीं देखा लोगों ने पर स्विटजरलैंड जाएँगे! अजंता जैसी चीज़ Switzerland के नाम के बाबा के दादा कोई नहीं बना सकता। Switzerland में देखने का क्या है? पत्थर। हम

तो Switzerland गए थे। अजंता नहीं देखी? आबू नहीं देखे। जो अपने देश के बारे में जानेगा ही नहीं वो इस देश को प्यार कैसे करेगा?

जब कला इस देश में चारों तरफ से बह रही है। चारों तरफ से बहने लगी है। सो कला की तरफ रूचि रखना और अपने देश की कला को पहले अपनाना चाहिए। नहीं तो वाकई में बेवकूफी की भी हद होती है। एक साहब ने मुझे बड़े Special बुलाया। ये बहुत दिन पहले की बात है। 30 साल हो गए होंगे अमेरिका से आए। आप माता जी को बुलाओ। उनकी बहन हमारी सहज योग में हैं। आप Airport पर जाने से पहले आपको एक चीज़ दिखानी है। अमेरिका से आए थे मैंने कहा पता नहीं क्या लाए हैं। मैं वहाँ गई। देखती क्या हूँ वो एक पंप ले कर आए हैं और एक बलून में भरने लगे और उसका सोफा बनाया। कहने लगे देखिए। अब विराजिए इस पर। मैंने कहा भई देखो, मेरे पास बहुत ज्यादा Vibrations हैं। ये फट जाएगा। मेरे लिए कोई तख्त-वख्त बिछा दो तुम, उस पर मैं बैठ जाऊँगी। मैं अपनी देसी हिन्दुस्तानी मोटी औरत हूँ, मेरे बस का नहीं है। अरे कहने लगे आप पर कुछ impression ही नहीं पड़ा। मैंने कहा impression अभी पड़ा है पर जब इस पर से मैं गिरूँगी तो Depression हो जाएगा। तो सबसे पहले जो बात कही वो अब फिर कहूँगी कि शारदा देवी की कृपा आपके इस भारत वर्ष पर बहुत है और क्योंकि पाकिस्तान व बांग्लादेश भी इसी देश का एक भाग है वहाँ पर भी है। पर धीरे-धीरे हट जाएगी। आजकल तो लोग वहाँ एक दूसरे को पत्थर ही मार रहे हैं। कुछ लोग औरतों को ज़मीन में गाड़ कर मार रहे हैं और कुछ लोग, कराची में कल देखा मैंने, दूसरों को पत्थरों पर पत्थर मार रहे हैं। वहाँ पर कला कैसे होगी? तो इस भारतवर्ष में जो देवी की कृपा है उसे आप अपनी नज़रों से देखिए। उसको समझिए, उसका आनंद उठाइए। फिर नाट्यकला है, बंगाल में और महाराष्ट्र में, नाट्यकला बहुत ऊँची है। वहाँ लोग Cinema नहीं जाते। नाटक को जाते हैं। महाराष्ट्रियन लोग आप लोगों जैसे रईस नहीं हैं। पर पांच रु. का टिकट हो चाहे सात रु. का हो वो जा कर नाटक देखेंगे। इसलिए नाट्यकला।

पहले सिनेमा बहुत अच्छे थे। पर अब सिनेमा तो गड़बड़ा गए। अब नाटक भी गड़बड़ा जाएंगे और ना जाने क्या-क्या हो जाएँगी। कुछ-कुछ ऐसी अजीब चीज़ें देखने में आई हैं कि लगता है शारदा देवी यहाँ से भाग खड़ी हो जाएँगी। उनका मान तो छोड़ो उनका बिल्कुल अपमान लोग करते हैं। इतनी विचित्र चीज़ें मैंने इस India में देखीं। मुझे आश्चर्य लगता है कि ये ऐसे चल कैसे रहे हैं। अब उन्होंने कहा है कि फिल्मों में से हम निकाल देंगे ये वो। हमारे जिन्दा जी हम अगर देख लें कि ये गंदगी निकल जाए तो बड़ा आनंद आएगा। तो India की जो Art है वो सूचक है। जैसे आप Chinese Art देखिए तो सींग जैसे, एक भूत के जैसा बना है Chinese, और Egypt की Art देखिए तो सब Dead है। कहीं वो Mummies बनाएंगे, ये आदमी ऐसे बनाएंगे जैसे कोई लाश खड़ी कर दी। पहले England, America में कला ठीक थी जब तक realistic बनाते रहे। फिर impressionistic बनाया, तब तक भी ठीक थी पर अब वहाँ जो Modern

कला बन गई है ये आपके मेरे और किसी भी इंसान के बस की नहीं। ऐसी विकृति आ गई है कि लगता है शारदा देवी वाकई भाग गई हैं और जितनी गंदी और जितनी उल्टी-सीधी और जितनी अधर्मी Picture बनेगी उतना ही उसका दाम, सिनेमा में। शारदा का बड़ा अपमान है। **आप सब सहजयोगियों को कला की समझ होनी चाहिए और कलात्मक चीज़ें आप इस्तेमाल करिए। खासकर हाथ से बनी हुई। तो ये Ecological Problem ही खत्म हो जाए।**

अपने घर में दो सुन्दर चीजें होने से अच्छा है बनिस्वत 25 प्लास्टिक की चीजें और 40 पेपर प्लेट्स। ये अपने भारत की संस्कृति है। इसके रोम-रोम में शारदा का प्रकाश है। औरतों ने इसे बचाए रक्खा है अब आदमियों को भी चाहिए कि इसकी रक्षा करें। सब क्योंकि अब हिन्दुस्तान में ऐसे बहुत से लोग हैं जो चार रंग से ज्यादा पांचवाँ रंग नहीं जानते। आप जानते हैं ना डाक्टर साहब बहुत से रंग, आते हैं? नहीं तो डॉक्टर लोग नहीं जानते। मैं तो डाक्टरों के साथ रही हूँ, डाक्टरों के साथ पढ़ी हूँ। इनको कला कभी नहीं आएगी। लेकिन जानते हैं तो बहुत बड़ी बात है। सो वो भी सूक्ष्म दृष्टि अपने अंदर आनी चाहिए। नाट्य कला में, हर चीज में, नृत्य में हर चीज में। अब ये नहीं आदमी औरतों जैसे नाचें, ये नहीं लेकिन आदमी, आदमियों जैसे, औरतें औरतों जैसे उसके शुद्ध स्वरूप में जब उतरें तो तब शारदा जी की तो कृपा है ही। संगीत में नृत्य में मैंने बहुत दफ़ा देखा है कि लोग जब हमारे सामने बजाते हैं तो बहुत जल्दी उनका नाम बढ़ जाता है, बहुत नाम होता है। बहुत अच्छा बजाने लगते हैं। शारदा जी की कृपा हो गई उन पर। लेकिन आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि हमारे देश का जो संगीत और नृत्य है, ऐसा कहीं भी दुनिया में नहीं है। कहीं भी।

अब तीसरी जो हमारे अंदर शक्ति है त्रिगुणात्मिका, वो महालक्ष्मी की शक्ति है। अब लक्ष्मी जी की पूजा तो अभी करके आए हैं टर्की में। वहाँ गरीबी आ गई थी इसलिए। पर जब तक जर्मनी से वो सामान मंगाना बंद नहीं करेंगे तब तक उनकी गरीबी नहीं जाने वाली। कहने लगे अब हमको उसी का taste हो गया। मैंने कहा वाह भई। अब भूखे मरोगे तो क्या होगा? तो मैंने सोचा वहाँ लक्ष्मी जी की पूजा हो जाए तो दीवाली वहीं हो गई। अब महालक्ष्मी की जो पूजा है यह सिर्फ साधकों के लिए।

जब लक्ष्मी जी का पूरी तरह से उपयोग ले लिया और बहुत हो गई लक्ष्मी, जैसे बुद्ध को हुआ था, महावीर को हुआ था, उपरति (विरक्ति) आ गई और उपरति आने के बाद वो परमात्मा को खोजने निकले। ये जो खोजने की शक्ति है ये महालक्ष्मी की शक्ति है। ये महालक्ष्मी का temple है कोल्हापुर में, स्वयंभू है। तो वहाँ के जोगवा गाते हैं, कि हे अम्बे तू जाग, हे अम्बे तू जाग। ये नामदेव ने लिखा 16वीं शताब्दि में। वहाँ के ब्राह्मणों से मैंने कहा कि महालक्ष्मी के मन्दिर में ये क्यों गाते हो भई?

कहने लगे पता नहीं अनादि काल से यहाँ चल रहा है यही गाना। जब से नामदेव हुए हैं। तो अम्बे कौन है? कहने लगे देवी है कोई। मैंने कहा आपको इतना भी नहीं मालूम? मैंने कहा आपको तो मैं नहीं समझा पाऊँगी। ये बड़ी

मुश्किल है। पर महालक्ष्मी के मन्दिर में भी अम्बे जागती है। वो वैसे। मध्यमार्ग में महालक्ष्मी हैं। उस मार्ग में आपकी सारी खोज left की right की, बुद्धि की सब खत्म हो जाती है। और आप मध्यमार्ग में आ गए। जब आपने खोजना शुरू कर दिया तब आप पर महालक्ष्मी की कृपा हो जाती है। Bible में इसे Redeemer कहा है। तीन शक्तियाँ बताई उन्होंने। पहली शक्ति को कहा है Comforter, Left side की। Right Side की को कहा है Councellor और बीच वाली को Redeemer ये Holy Ghost की तीन शक्तियाँ हैं। सो जो मध्य मार्ग में आप प्रवेश करने लगते हैं और मध्य मार्ग में आ जाते हैं तब आप एक साधक हो गए और साधक के ऊपर महालक्ष्मी उमड़ पड़ती है। महालक्ष्मी की कृपा उस पर होती है। महालक्ष्मी की शक्ति का चढ़ना बहुत मुश्किल है क्योंकि कभी मन Left को जाता है, कभी Right को जाता है। कभी left को जाता है, कभी Right को। एक भाग कुण्डलिनी के जागरण से ही मध्य मार्ग को प्राप्त करते हैं।

पहले तो वो एक सोपान ब्रिज बनाती हैं। Void और उससे गुज़र कर कुण्डलिनी शक्ति, मध्य मार्ग से गुज़रती हुई ब्रह्मरंद्र को छेदती हुई ब्रह्माण्ड से एकाकारिता प्राप्त करती है और जब ये घटना हो जाती है, उसके बाद त्रिगुणात्मिका मिलकर के आपकी आज्ञा चक्र को छेदकर जब आप सहस्त्रार में आते हैं तो यहाँ आदिशक्ति का स्वरूप महामाया का है। सहस्त्रारे महामाया, सहस्त्रारे महामाया। जब सहस्त्रार को खोलने का काम आता है तो वो महामाया का स्वरूप धारण करती है और वो स्वरूप बहुत छिपा हुआ, बड़ा छिपा हुआ और जैसे-जैसे उसे जानने का आप प्रयत्न करते हैं, तो आप सूक्ष्म से सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम हो जाते हैं। यह सूक्ष्मता अत्यंत आवश्यक है क्योंकि हमारे अंदर जो कुछ भी गौरवशाली विशेष धन है उसको जानने के लिए सूक्ष्म होना बहुत आवश्यक है। उसमें एक बाधा आती है और वो है आपकी left और Right की खींच। इसलिए हमसे हमेशा कहते हैं कि अपने को आप प्रत्यक्ष करा करो। Introspection दूसरों को नहीं, अपने को। धीरे-धीरे ये होने से आप सहज में उतरेंगे। आप चक्रों के बारे में जानते हैं। महाकाली की शक्ति के बारे में मैंने बता दिया और महासरस्वती के बारे में, और महालक्ष्मी के बारे में मैंने बहुत बार, बहुत बार बताया है। ये सब बताना बताना रह जाता है। जब तक साधक उस स्थिति को प्राप्त नहीं होता उसे चैन नहीं आता। उस स्थिति को प्राप्त करने पर भी उसको इस्तेमाल नहीं करते तो ये विश्वास पक्का नहीं बनता और निर्विकल्प में उतरना मुश्किल हो जाता है।

आज का lecture कुछ ज्यादा हो गया क्योंकि विषय ही कुछ ऐसा था। ये तो तीनों शक्तियों का वर्णन किया लेकिन उससे परे आदिशक्ति है और उनका वर्णन करना कोई आसान नहीं। वो बड़ी ऊँची चीज़ हैं। उनका वर्णन करना तो कठिन है। आप ही लोग उनका वर्णन कर सकते हैं मैं नहीं। ये आप पर छोड़ती हूँ। सबको मेरा अनन्त आशीर्वाद।

सहजयोग केन्द्र हरिद्वार उत्तर प्रदेश में दिवाली पूजा 2000 के पश्चात् लिए गए फोटोग्राफ में प्रसन्नता से कुण्डलाकार में नाचती हुई कुण्डलिनियाँ।